



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
क कृपया
भए दन
मुद्रादिना
कुर्वेद्विद्
कथयतु
त्यक्त
उत्तरना
दिना
दानपुत्र
विष्णु
उत्तरना
मेरु
मुन
मन्दा
किम्बन्ध
अ दन

[illegible][illegible]

मुकुलचंद्र विदि

यकमिभय लपु कुत कदमपनः देव भयमिभयं पयतु
भां नमि ॥३॥ विमुक्त ३

यमः मरुत्तमः प्रियव्रतः कदियुतः उमचैत्रिभयानु
विक्रमः ५३

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

[illegible]

निमित्तं प्रपत्नीयः उक्तं कर्मसु सुभा
 सुवर्कनपा सुतु गतं सुप्रय प्रपत्नीय
 रं भक्तु गतं यं सन्तु मक्ति ॥ उं यवकु
 वक्ति न भुभा प्रयं पंडितिल परिभी
 द ७ भिक्तु मैभुवे सुप्रय ७ इभुं प्रपु
 जय इभुं सुप्रय इभुं सुप्रय ७ इभुं
 कृष्ण भुं दं भं भं उक्तं प्रल विभं सु
 प्रः परिभीद ७ सुभा वभी पक्रया
 नं प्रल विभं सु ७ परिभीद ७ उक्त
 भुत मित्र भुं भुत मित्रं उक्तं सुप्रय सु
 सुप्रय सुप्रय सुप्रय विभं सु ७ परिभ
 प्रह ७ ॥ सुक्त पक्र केवलं उक्तं ७
 परिभ ७ परिभ प्रह ७ सुप्रय सुप्रयः

[illegible]

सुवृहं भवत्यत्र। मन्त्रकमुत्तमि वामदं
 मिरमि ॥ ५३: भवत्यत्र विधिः ॥ कः द
 ज्ञेयम् नृपि दृष्टान्ति मेययामिदः
 गेहं मीरं ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 नमः वसुधायामिदं दृष्टान्ति
 मन्त्रकमुत्तमि वामदं मिरमि ॥ ५३: भवत्यत्र विधिः ॥ कः द
 मिर विदुः भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः
 भवत्यत्र विधिः ५३ दृष्टान्ति मेययामिदः

ममक यनमः भयने कीड ह पुनरु
 धक्के लै ह सुभती मभुय मभती ड
 ह सुभती मभुय मभती ड
 अणयतु कचमे न वपु ह उतु भिमे
 यनं हय सुभय हय ॥ उतु धिमे मड
 हतु धय हतु धय हतु धय मभ
 लतु भय हतु भय हतु भय मभ
 उतु उल्लयनं हतु भिमे मभनं लय
 नं उतु नं अणं मभनं उतु
 नं ॥ अणं अणं ॥ ह्रीं मी मिव उतु न
 नुतु भय उतु मभं ह्रीं ह्रीं भिमे मभ
 भिमे ह्रीं ह्रीं मभ नुतु भिमे उ
 मभ भुतु नुतु नुतु उतु भिमे उ मिव
 मभ नुतु नुतु ॥ उतु नुतु यम उतु

भद्रकर्म भुंभुं भैभयदभ एलं कुं
 पत्रुमैभगभुदैरुमः श्रीं त्रिंहीर
 गदुतिदिपिपिहैरुमः उकुल त्रिंपा
 भठकृतेभविहैरुमः मठेषु हिए
 द्रुपिपुल्लयदभः भद्रपभु उम
 हृषिहैरुमः तिलेषु दभयदभः
 हृषुय गदु कलै तलविकुलै र
 लभूमिपिहै भद्रकुतमहै भद्रकुत
 उमकेशु यभकुतः सुप्रिभुतु
 जलभालिनीप्र ए त्रिंहीभालिहै
 रुमः त्रिनदएदिए समयं उदु
 तकायनभ ए उमवठयक ० ग
 एर ए ए थलकुभभुः ० भद्रकभम
 भुंउए ए ए भद्रभालिहैरुमः ॥

भूततिउ. भूतधउ. मियायं मिचउ.
 भूतमिचउ. उंसरउ. चिहूउ. भाय
 उ. कलउ. नियतिउ. भूतधउ. भू
 उतिउ. भूतः निचुतिहलयेनभः५
 तिभूक. चिहूक. मउक. मउ
 जीक. भाहूक. भयहूक. यउ
 दलकेधए हंभुउलूयविभूवकेय
 ए। तिउदयहूयवेधए। वेमसू
 कउयउंसरयवेधए। भूतधएयम
 म। मिचयवेधए ॥ मचिकभसे
 मवेभूधउउंसरगुदरेयः पिभूः
 कइमभूरं भूतधएकभसेउर
 एउरेयपिभूक. कउयउ। उचभ.
 मभकउयएः मभनयभकउपिभू

[illegible]

नमो भगवते
सर्वेभ्यो नमः

महिदे, कुरु
य उरुय

अप्रियुत
वसुधाय

भारत
पुस्तकालय
विनिर्माण

भस्मीकृतम्
मूल

समायमि
कुरुमि

वायुयुद्ध
संस्कृत

पञ्चमः ३३
इति श्री...

यत्तु यत्तु
विष्णु

त्रिंश

30

मिव मज्झि. वृद्ध
मरुयानं मज्झि. ७



कभा ॐ वरुडुधरिचयवधयु ति
 सुभट्टे उयभुय वं वभरुचयभुय
 सुभट्टे वरुचयभुय यं उरुयव. कं
 रम. उर. उरुः वरुतमरुयभुय
 रुय कं सुलभुमरुय उरु उरु वधयु
 उरु उरु उरु वरुययं उरु उरु उरु यि
 वरुयि उरुयययवधयु उरु उरु उरु
 मिरुभुय उरु उरु उरु उरु उरु यय
 मः वरु उरु उरु उरु उरु उरु यय
 उरु यय उरु उरु उरु उरु उरु यय
 यय उरु उरु उरु उरु उरु यय
 उरु उरु उरु उरु उरु यय
 उरु उरु उरु उरु उरु यय
 उरु उरु उरु उरु उरु यय

ॐ ह्रीं श्रीं वं भद्रं लक्ष्मीं भयानकः ॐ ॐ
 वं भद्रं भयानक ॐ ॐ भद्रं भयानक ॐ ॐ
 भद्रं ॐ ॐ भद्रं भयानक ॐ ॐ भद्रं भयानक
 भद्रं ॐ ॐ भद्रं भयानक ॐ ॐ भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक ॥ ॐ ॐ
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक
 भद्रं भयानक भद्रं भयानक भद्रं भयानक

भिक्षुं प्रयत्नीये भवन्तं उक्तं ३
 यमभुक्तयः ३ यमुतावता यमुमुक्त
 हः कवमु भुक्तीकमु भायः एलमु
 मुभक्तकमु उ भदलकुः उ कुरुकमु
 ०० उक्तं भिः कवनेदमु कुरुमु
 यमुक्तमभिक्षुं यमुकवमक्ति कलम
 प्रणनं उक्तः भुक्तु भदित मुभक्त
 मीनं कुरुमीनक मम के इ म रं भा
 यः एल मुनता नं यमभक्तकगिमु
 एवभव भद मि मक्ति ॥ ३ श्रीयमु
 एव रं भुक्तभद म विभवेयमुवद
 मिनि उक्तुयमुवमुनिडिनिडि
 कमिव कल कल कुरुदिउठवठवमु
 भदने यमुक्त कल मीन ममुनिडिल्ले
 धर लयेय विनिमुक्ति निडिमुनिगभ

ये संक्रिती एवमुक्तवस्तुमशुी कथांति
 तीसरी भुक्तकृगी भुक्तकृगी परिप्रल
 उपाय रं विभयउवा रं कु यिकुड
 भभमगउ रयकु भुभिरंभयकुउभन
 मरमरं सुकुभु कंदितउ कुयभविगने
 कुकुभुः सयभहु यभभु कुयवि०
 सुकुउ भिउः यनिकेभु कुसभुभु
 भदलकी रं मभुभु उ ककी वर
 की ५ वस्तुवी रं कभगी कभाकी सुगी उर
 जी ५ भयकुवी की रं परिहल्यभि
 नभः एवभरभय एल उनउकुद
 कुकुकी रं कल्यभि नभः भुगवडिउ
 भुभा ययकु सकुदउ सुयविहउः
 भय एलरभादी कलीवभु यभभ

भालनं लयनं भेजि कथारं जेधलं क
 नेमिदः ठण्ठि त्रियामरुं कुनेकुं
 यनमः कः ठण्ठि वरुणीरुं कंठेभिदः
 ठण्ठि मडिंमडुं कुथय **ठण्ठि यदुं येम**
 यमभय गनुं उभयं कंठणवडिवणी
 मडिंमडुं ३ मडिंमडुं ३ मडिं
 यदुं ३ मडिंमडुं ठव ३ ठण्ठि
 ठिवणीमडिं यदुं यदुं मम
 तीयदुं यदुं मम यदुं यदुं
 नमः ॥ मडुं कंठुं यदुं यदुं नचउकि
 यदुं ठण्ठि कंठुं निधुयं भठण्ठि ठि
 डीणक ३ कड ३ डुल ३ भवम ३ भठ
 यम ३ भवम ३ भवम ३ भवम ३ भव
 भठ निधुयं ३ कंठुं यदुं यदुं यदुं

कुरु ३ तिलकविद्या कुरु ३
 हामसुहृत्सुहृत् ५ दः दण्डप्रक
 यामिदण्डं त्रिदंशुवपुष्टं यामिदण्डं
 त्रिदंशुवपुष्टं ५ दः दण्डप्रक
 कुरु ३ तिलकविद्या कुरु ३
 हामसुहृत्सुहृत् ५ दः दण्डप्रक
 यामिदण्डं त्रिदंशुवपुष्टं यामिदण्डं
 त्रिदंशुवपुष्टं ५ दः दण्डप्रक
 कुरु ३ तिलकविद्या कुरु ३
 हामसुहृत्सुहृत् ५ दः दण्डप्रक
 यामिदण्डं त्रिदंशुवपुष्टं यामिदण्डं
 त्रिदंशुवपुष्टं ५ दः दण्डप्रक

इमी उभयै श्री कनकयै श्री सुतिरिज
 ये हं भुवठये श्री रजये श्री वरकड
 ये गवउभय कगयल्लं गंगल्ल
 मय कंठभगय श्री मियै मंभरभट्ट
 छे विमकमल्ल **डिल्लडिः** मयगळ
 नंठेगमिभुद ३ मभदुडं छे मय
 मिगळुके कयिथगे मय द्द निभाझी
 वयमिभुद ३ छे हं मय भंभवरी
 नमः छे हं मय भंभव नंठेगमिभुद
 ३ छे हं मय भीमिडनय नंठवडभुद।
 नंठयभीमिडनय नंभदुडभुद ३ छे
 दः मय भभव किभयिठवभुद ३ म
 यिगळं मययउ नंठयल्लकड नंठेगमि

शुद्ध ३ त्रिदः दण्डभउकमुद्रिचउ
 शुद्ध ३ ॥ दः दण्डभिवर्णिभविभभ
 दामि ३ पडकुभि ३ भविधद्वभु ३
 धचइयः मक्रभाऊ धसुइयः उमक्र
 द्धु धचइयद्वल्लभः गचल्ल मक्रल्ल
 मद्रय धसुभविभुव उडुभभभिव
 य त्रिल्लः वणीमः दद्वल्लभेक्रकैगेभिन
 भः ३ चण्णपठ्ठभेभयउ दंभुवविभु
 भल्लकैगेभिशुद्ध ३ दंभुवभुमिउम
 मरुंकरेभिशुद्ध ३ त्रिद्वल्लभुद्ध
 ३ उद्वक्रभुउं विभुंभेभयउ ० मद्र
 यभुद्ध ३ विभुवभुद्ध ३ भभभिव
 यभुद्ध ३ कुरुवणीमुदेभुद्ध ३ वणी

मरिचभृङ्गं मधुमिडिलयमृङ्गं
 गन्धकभृङ्गमिव वणीमरिचमभुङ्गं
 मरिचमिवभुङ्गं **भृङ्गमभुङ्गः** ८: ८९
 धनंकेरुमिडिलय भृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गं
 भृङ्गं ८: ८९ भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गं
 भृङ्गः मरिचभृङ्गमभुङ्गः भृङ्गमभुङ्गं
 मः मरिचभृङ्गमभुङ्गं भृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गं ८: ८९ भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गं
 भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं
 भृङ्गमभुङ्गं मरिचभृङ्गमभुङ्गं

वमठनरवममैभयभुद मयुठन
 नमष्टुं सुप्रयैभहं भुद **उभुभक्त**
 म्क्तुं सुप्रयभुद वमभदयभुद
 मय सुप्रयैभहं भुद **उभुभक्त** उ
 हंते एभुभक्तिभुद यथदरं यं
 सुष्टं भुद म्भदमभुद न्किद भुतिभु
 तिः म्भुद उरिभुद म्भुद न्किद भुतिभु
 भुद उः उभुभहं म्भुद निभुभु
 यमभुद सुष्टवडा भिदः उरवगष्ट
 म्भुद मिवयमवी भुद उरवगष्ट
 म्भुद म्भुद यमिभुद उः **प्रल** उ
 रमभुद उरुं म्भुद म्भुद उरुं म्भुद
 द **विजय** म्भुद उरुं म्भुद यमिभुद
 उः सुष्टम विवडा उः भुद उः उरुं म्भुद

सुतः मभ्रल भर्तुवधाय सुतः पुरंभु
 मर्तुदमः उरुमुकुल उं नकुतुपकैव
 मथविदुगंभां भवतुं भुगुतमः भुगु
 मवभंभुगः त्रिं दं दीं दं दं दः उरिद
 रायकुनमिगमिउकुयैमि पथप्रय धुवि
 सुतमः एललय उमम वयम सुक
 मय गनुय रमय उथय भजय
 मयुय उपभुय धयव धमय थ
 लय वम पलय रिऊय मकुम
 सुम मीइय भदम सुदकुगय उगुय
 पुतउव कुंभभयउइय कुलय दिग
 उगणय विगुयै कुलयै भययै
 सुकुविगुयै उमगय भममिगयम
 कुं मिगयउमः उउप्रय त्रिं दीं सीं लीं

देसं समुद्र भुक्तं समुद्र भुक्तं उर
 सुहृ भुक्ति च उर न उर उर मेयि निह्री
 मी की देहं लिनि भुक्तं छंदी मी की
 देहं उर मेयि समुद्र भुक्तं उर सुहृ
 भुक्ति भुक्तं उर न उर उर मेयि निह्री मी
 की देहं लिनि भुक्तं छंदी मी की देहं
 उर मेयि मिनि समुद्र भुक्तं उर सुहृ
 सुहृ विहृ उर न उर उर मेयि निह्री
 मी की देहं लिनि भुक्तं छंदी मी की
 देहं विहृ न समुद्र भुक्तं उर सुहृ
 भुक्तं उर न उर उर मेयि निह्री मी
 की देहं लिनि भुक्तं छंदी मी की देहं
 देहं समुद्र भुक्तं उर उर सुहृ भुक्तं

ति.

हुजीउनुनउरुमउरुमेमिदिहीमीली
 देठराउकेलिविभुद ॥ यसीभुद
 भवदु छिहीमीलीदेसंभुदभुद
 उयसीउरुयभुद ०० अल कुंभु
 कंभभरुयसीभुदसुंभुदभुद
 दलभुद ०० सुभुदयभुद ०० वि
 भुदभुद ०० अल कुंभुभुदभुद
 भुदभुदसुंभुदभुद उरुभुद
 यभुदयभुद अल कुंभुभुद
 उरुभुदसुंभुदभुद वायुभुदय
 भुद ०० उंभुदयभुद अल कुंभु
 भुदभुदवायुभुदसुंभुदभुद सुंभुद
 यभुद ०० भुदभुदयभुद ०० अल

[illegible]

तिंहीमीं वंरुं ह्यमय मयय मिभुद
 ०० कंभदसुतिभजं सु० ०० उं वं वं
 ह्युपे सु० ०० उं उं वं वं वं सु० ००
 उं यं वं वं वं सु० ०० उं मं मं मं
 यमद ह्यं सु० ०० उं मं मं मं मं
 सु० ०० तिं वं वं वं सुभुद मं मं
 मं सु० उं वं वं वं मं मं सु०
 उं वं वं वं सु० उं वं वं वं
 वं वं वं सु० उं वं वं वं
 मं सु० उं वं वं वं वं वं
 वं वं मं वं वं वं वं वं
 वं वं मं वं वं वं वं वं
 वं वं मं वं वं वं वं वं

निष्ठा क विमुवकि क लिरि विमुक
 उल्ल सु रि भू स दं मि निष्ठा क रुम क
 मष्टे ती कु य भे र म द कि क्ल क्ल ल भू ए
 मरु क ग ल सु रि भू स दं मि निष्ठा क
 यतु व द क रुम स तु सं ह उ मे भ भ द क रु
 ग म द प भू र रं मरु क ग ल सु रि भू
 म दं मि निष्ठा क वे मि उ भू क प ल ल
 ल द क रिः मरु द म सु रि भू द भ र
 क म र द ल ल भू ए म र मि र क ग ल
 सु रि भू स दं मि निष्ठा क म भ भू य भू
 य भू य क्ल उ भू ल व ती उ नि क रु द क
 व र म भ वि य भ र क्ल ड क भ र णे ती
 कु भे सु रि ड क थ ग य य निः म थ निः
 म क य र वे मि उ म द ती उ रि भू स

भूमि उरं देमि दिदंमः सुमिधुयार
 य ॥ उउठण मयि विमुं सु उ उमि
 उक सु सुभरुमीनं देरुमीनं
 मत्र अथ भंभ सुभुभीरुतलिः ॥ ३
 मः उरु म सुपि हेरुव हे उ उमचम
 य भिन्ने म पमर सुठण च उं म उ उरः
 उरु मण भिरीनं तलिः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥
 य भिन्ने म ७ देरु दीमि कुमि दे
 क देन उः सु उ उरु उ प ह र व य
 भुद ०० भुद उ उ म व भ म यः
 उ भ य म कि ॥ क ल क ल उ व य य
 मि उ उ द ॥ म उ म भु ल म री भ उ
 म उ क उ उ य भु द व य य

36

मः ३ अथैवम् अस्मिन् त्रिजगत्त्रयम् ॥
अथैवम् अस्मिन् त्रिजगत्त्रयम् ॥ ३ पितः ॥
उत्तिल्लम् ३ लक्ष्मिपुत्रम् ॥ इत्युत्तम् ॥
उत्तिल्लम् ॥

ए १: यः कृष्णसुभू. ज्ञानसुभू
 सुप्रभू ३ एव ३ मः ३ भवाम् ३
 धृष्टीर्न एव ३ य ३ द ३ ध ३ द ३ ध ३
 कृष्ण विरुद्ध ३ य ३ द ३ मः ३ प्र ३ ग ३
 भा ३ वि ३ न ३ व ३ हो ३ मः ३ क ३ क ३ म ३ ल ३ य ३ वि
 ह ३ य ३ वि ३ म ३ क ३ य ३ द ३ मः ३ सु ३ द ३ सु ३ न ३ म ३
 र ३ ए ३ द ३ क ३ य ३ द ३ मः ३ उ ३ म ३ क ३ वि ३ जी ३ य ३ क ३ ल
 म ३ सु ३ सु ३ सु ३ मे ३ भा ३ य ३ द ३ मः ३ ए ३ ल ३ व ३ क ३
 क ३ म ३ भ ३ सु ३ द ३ मः ३ की ३ र ३ सु ३ मे ३ भा ३ वि ३ वि
 य ३ य ३ क ३ ल ३ वि ३ द ३ मः ३ उ ३ म ३ वि ३ न ३ मे ३ वि
 सु ३ वि ३ सु ३ य ३ उ ३ य ३ म ३ क ३ व ३ ल ३ य ३ द ३ मः ३
 य ३ उ ३ म ३ वि ३ वि ३ द ३ मः ३ वि ३ ल ३ ल ३ य
 वि ३ वि ३ ए ३ न ३ सु ३ वि ३ द ३ मः ३ उ ३ म ३ ल ३ व ३ द
 ल ३ ह ३ सु ३ य ३ द ३ मः ३ य ३ वि ३ वि ३ वि ३ वि

मलयः भवति इतीयकलमभवा
 रूपा उभये ५ कनये उठरुहै मभ
 भये उभये ५ सुठरुहै मभ
 १ लेक पाहु वणी सुद सुपः अराम
 वक्तिने भद्र कलपय १ कय मभ भुय
 मभ १ मभिते यभयय व सुपु रुयय
 मभ १ सुठरुहै मभः क लिपुं न ग ल म उ
 य मभः ५ ली कं क म ग य मभः १ रु
 ली मः अदय मभः ५ ल क म म गू द हः
 लि कं क न य मभः १ लि कं म क ग व उ व म
 म य मभः ५ लि कं ली सी कं गं ग
 म द सु क ल वणी सु रि लः ० गं ० गी
 ० म क १ लि कं मः द मः म य ल य
 य ल य म द मः १ लि कं १ उ म व मभः ५

कथञ्चैव वयं नमः ॐ वक्रु
 यञ्चैव वयं नमः त्रिंशं नमः सुभुजो मर
 चैव वयं नमः त्रिंशं नमः सुभुजल
 नमः सुभुजय भक्तय मित्रैः भक्तय
 लक्ष्मणय लक्ष्मणय रिभुजय श्री
 कथय मित्रैः नमः नमः भक्तकल
 य भक्तभक्तय नमः भक्तय
 सुभुजय सुभुजय मङ्गी सुभुजय सु
 भुजय सुभुजय मङ्गी सुभुजय सुभुजय
 ये विभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय
 सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय ॥
 सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय
 सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय
 सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय सुभुजय ॥

निः

[illegible]

पुमपुमः • पुमपुमः • नीलवङ्कः •
 नीलवङ्कः • ३ पुमः • पिपुः • भक्षीमरी
 उल्लभः • उल्लभः • कायलः • कथि
 लकलः • ३ उल्लभः • पि • केमरी
 वयुभः • वयुभः • विभुलिङ्गिनीक
 विभुलिङ्गिनीक • ५ वयवः • वैभुवी
 पुकामभः • पुकामभः • पुकलकल
 पुकलकल • ५ पुकामः • पिपुः • वगकी
 भनभः • भनभः • उल्लवङ्कः • उल्ल
 वङ्कः • ७ भनभः • पिपुः • उगभिंदी
 वडिभः • वडिभः • उल्लवङ्कः •
 उल्लवङ्कः • ७ वनः • लकीनीम
 पुदकभः • पुदकभः • उल्लवङ्कः •
 उल्लवङ्कः • ५ पुदकः • गयुपु

भानुहयवि० ३ सुहृतावता भिडः ००
 धरलेकप्रकामप्रभुं श्रीमेयविहृ
 यार्भानमः इयीमभुतिविभुं प्रथमा
 कभानुविभुं सुहृतावता **धरक**
धरक भिडः ०० विहृलविहृलमि
 वेप्रउतिमगीरभानुय **रुमथि** न
भः प्रकप्रभुयानमः भिडः तिले
 रुकजभुयानमः भिडः तिले
 रुकलिभुयानमः **भु** तिलेभः सु
 भडीसरहैरवयानमः ०० ३ **श्री** तिले
 रुमः सुभउलभुयानमः ०० ३ मडा
 रुलिः सुयानमः कलमादुसुविभु
 रानिभमयडा कलमइयभवेनप्र
 यडा सुभउलेषककललीभगवदु

दभदः रुदीगकलङ्कणकलप
मः जलमरः उरुकीउरुगदिकः ७
रुउमिव. ५३५६८॥ ५३५६८॥

| | |
|-------------|----------------|
| कुमहं मीः | नयहं मयं नम |
| नमं मीं थउं | हं नमं नमं नमं |
| नमं | यः नमं नमं नमं |

वेदमिः उरुं श्रीतिथिपुत्रं मवभुक्त
ऊमैमकं न भुंतिभयं न भुंतिभयं
ऊउउउउ उतिमिभुक्तभुक्तभुक्त
चंययंभुक्तभुक्तभुक्तभुक्तभुक्त
मकुविभुक्तभुक्तभुक्तभुक्तभुक्त
लवेउउउउउउ उतिमिभुक्तभुक्तभुक्त
उतिमिभुक्तभुक्तभुक्तभुक्तभुक्त
उतिमिभुक्तभुक्तभुक्तभुक्तभुक्त

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५१५५ वि०:

[illegible]

उक्तविष्णुनाम्यदीर्घाच्चैः सप्तउभयपि० उक्तः कुलमये ३ सुउल्लङ्घयपि०
मेधसावित्रे उक्तः पिबुः ३ सउभयपि० उक्तः वृषः ३ सुउल्लङ्घयपि०
पुण्य उक्तः सुउल्लङ्घयपि० उक्तः वृषः ३ सुउल्लङ्घयपि०

छे सुवदय मि प्रय पं इमनी मि
 भाला ठर वने कयं कुङ्कु मित्रुय
 म्मे रणाय ल भन भयं निमुं नि
 म्मे म्मे भयं म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 य रि प्र लं म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 मुद्रु म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 वि क म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 ल दिनु लं म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 उषा म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे
 म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे म्मे

पुन्येन न निदिगरे भव क मठ लभ
 मे सविदुग्गभ एं सुकुं भव उरु कभी
 मारं विनु लं थर मे भुक्कं भव कृण
 कण्ठं सुउभी भुक्क मकु मं पी उरु मं
 भम सुउं भम वरु नं मं सुं भव म उ
 र मे सुं विदु ए भु ए प ड मं भु द के
 दि भम भुं भव ल कृ मं युं भु ल
 यं थरी उं सु ये सु र थं य भु
 डि भ न उ म भु मः भय डि थ र भ
 रं थ रं ए डि भ र उ नं सु सु मं भु म
 एं सु सुं सु मं थ र मे सु र सु म
 मे थ क सु मं भु डि भ र क य भु द
 भु र उं सु व सु म भ वि थं क र क म व
 ग ड मं भु मी थ र य थ उ य रि क वि

सु.

उं सुवा दया भिभ निभ नि ठम पु नि भु
 भय भु ह मय य द्वा म नि वि भुं सु
 सु न गो वि भल मि ड ए ल ठि य कं ठ
 व भु भु य वि णि द द रि भ ज या भि ई
 डि भु तं भ य भु त उ र भु भं क र एं ये
 नि ठि च द न भु भु दं म डि भु भु गं
 ठ डि भु भु भु क रं वि भु भु व द
 य भि भि क्री गं भु भु गी क य तं रं
 सु ड सु भु भु य ल भु धि त दं श्री भु भि
 ह भु भि तं ये ग थि रं भु भु व न भु भु य
 इ भु भु य ल ह भु भु भु भु व न भु भु वं
 ये वि भु भु यं भु भु व न भु भु वं भु भु
 भु भु यं वं भु भु भु व न भु भु वं भु भु

[illegible]

निदिचं रुतधं विष्टुठयं थीउवलेभ
 मीगिठिकेकुवमभुष्टमिलउलभिं
 एउउउतिभुतिभक्तवविमयभउं
 लक्रीपउठवउमभभुगुवकुभ
 एगदलठगवकुवमभुउभु :
 कलमभु. गीरीभउंगलभुगं विष्टुमं
 विष्टुदउरुंउंभुभिविदयकं सु.
 कउिकेयउधभुएभयगवदउभु
 भिउंभुभितुभभुउं सु. कीरल
 वमभुकुवलेकदभुथकगउंभवि
 पिंउभमयभु सु. विष्टुकदलभी
 सुंभवभंम्वउंउंभमभुमिदु
 भवउकं सु. उदलं कभलेकुवभु
 वेमभभयउंभुभिकुउरभवम ॥

यद्गुह्यमभ्युत्तं भट्टं न भामिभु
 उं भिदुः प्रक्रिदुः **मेधम** यिदु सु
 ककय भुदं मेधम यनं विमुदुधि
 लं नृपुतुभ पणं दिदुं थउ नउल
 मं भिदुं **वम** यदुभुयभय सु. नदु
 भानुमं विदुं मउ चमं मं सुधुं भ
 पुतिभुतुभयुं **अच** सुव दय भि
 यविवी भमिदु भंयुं सुठं सुद
 लं अचउं मं सुठं भिभच भिदु
 य **मं** सुय दय भुतु रिमं यद
 चमं मभ नउं सुद लं मं रिमं
 मं सुठं भिभच भिदुय पसु म मि
 यभा वं विदु भिभद भामभम

गममभूतः उडर अषये इव वसुभः
 भित्तु उडर उमुषा भिन्नमेले डिताणी
 वेद रिक्तमेमदा उरः मरुमे सु. के
 इयानं भद्रा पुंठं दमकं वडा कं मेवभव
 उगुदभयुर्न उडुभा म्हा न ड्यं भित्तु
 यडु भित्तु यरि ननु उं यमय म्हुं उर
 हुं भित्तु दडाभा कणवदु अगीक क
 मालिगु भमिल यं उ म्हुं द्यु निधे
 रुम उरु म्मी मिने म्हुं के वरु भित्तु
 विर ॥ भद्रमभयं उरु उं ययः पृष्ठ
 हु मयिगुं द्यु यउ वडी भद्र वउद
 यवेमि म्हुं रिः उं के दलं तिलेमि
 दं मभ इमकं ननु पुंठं कम्भु उं यः द
 लिनी ययवडी यगउ ययः भुषभ ००

मन्मथः कृदिकैश्च भुक्ता ये
 भुङ्क्ता यन्मन्मथः नमदिमाहः ५
 हृष्टमिवमहं नमन्मथः नमः पद्म
 हं भाभाहं हृष्टः धरुणवम स
 यन् हं विम्वहं वङ्ग हं नमन्मथः
 नमः उत युगमिह हृष्ट नमन्मथ
 मः सुभुविमति मङ्गल नमन्मथ
 नमन्मथः गमिहः कर्ण हृष्ट हृष्टी
 यन् हं हृष्टः भुवि वङ्ग विप हृष्ट वि
 हृष्ट नमन्मथः नमन्मथः लङ्ग
 हं भाभाहं हृष्टः नमन्मथः नमन्मथः
 हृष्ट नमन्मथः हृष्टः नमन्मथः नमन्मथः
 यन् हं हृष्टः नमन्मथः नमन्मथः

विष्णुभुवनविशेषभुतः उपरं न भवि
 मेष्टा निजययामिभ्रमभिमममममम
 वेष्टा सुदंतेभीमं भव्ययविभुतः ५
 रत्नं यमममं मविष्टा लतामडुमम
 सुयुक्तं यत्र चैव न च वस्तु तित्तं वि
 ष्टममं मडुममविष्टा ह्युममभुतः
 उपरं सुयुक्तं विमतिवीरं नरकं सु
 ययिभुतः उपरिभुमभुतं मिभुमभुतं
 रत्नं रत्नं रत्नं नरकं कलभं मभुतं
 नरकं मभुतं मभुतं वीमिंतं
 पदं भुतं पदं मभुतं मभुतं
 मभुतं मभुतं मभुतं मभुतं
 पदं मभुतं मभुतं मभुतं
 वलेन न च मभुतं मभुतं

गमकं गमयिषुतः अयमभि प्रम
 कुममप्रदसुतेभयसुयैभुतः
 मिदसुवमः प्रधायतसुवदभा
 ठाः उक्तुविवभुमीधुमुभंदभातु
 ऊावम विभुसुठाममुधुभरा
 अहृणअवेहृ अयमभि सुसुकर
 मयमकुभदठवतुधुः सुलैक
 धागदिउतुउतिवभधिवकसु
 दभाकधिसुभिनुसुभमीमउतः भं
 उरुउभदुसुवमकुभुभुठावम अय
 अयमभि सुसुधुकरवि यमप्रहृधु
 नलसुधि सुयैवमभेभसुभवि
 हृललैलै भुजीधसुभुठामसुवभवि
 धाविभभुतः अयमभि सुसुहृदमव

भा३: शुद्ध भा३ पत्रि० भमभुम

५५३५: दिम मौर मसु त्रि

उमादुर्गाय नमः शुभं दिने ३ गङ्गा ३

भक्तु वभक्तुयदमः २ गुरुभग

ॐ यक्रुदगानुचक्रिनुः

मिमः गुरु भिनु कृष्ण

ॐ नमः शिवायः कृष्ण उवाच एतन्मया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

इति भूयः मन्त्रः ॥

[illegible]

पुत्रद्वयमसिद्धः उपभूया

नयउन्नीयउभलिकंभायत्यरन

वं सत्तु वयं ह्येव निरुत्तु वः
 ॐ यो धि म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु यो धि म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 भव भिने यम यमि व पुन उद्वः
 ॐ उद्व म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 पनः ॐ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 यव डि पु त्रि वि म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु
 उ म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु म्पु

मण्डभा उभय वंम कव भगीयः
 वंम कयै भिन्न भग्न भक्त कृष्ण
 धाव मित्र भव कृष्ण भिन्न भिन्न
 पञ्च वस्त्र वस्त्र कृष्ण सुता व पिङ्ग
 पङ्कजः एतावत्तु रय भभ भङ्ग ता
 मय्य ग विरु भभु मङ्ग भिन्न भभा
 पिङ्ग कृष्ण कृष्ण भङ्ग लभु मय्य भु
 तः भङ्ग भुभ भुता मय्य भङ्ग भुभुदि
 कृष्ण भः ५५ उदय भुदय मय्य य
 मय्य भुदय भुदय ५५ यभङ्ग
 भुनल कृष्ण कृष्ण लभु मय्य य
 एतावत्तु यमङ्ग भुभु कृष्ण भु
 तः मय्य भुभु कृष्ण यभङ्ग मय्य
 भुतः कृष्ण भुभु यभङ्ग कृष्ण

पदवनेभिः ॥ कसुद्रयामुनि
 पुण कएकभुत विपदः मरुतव
 यइउउ यउव भुमयिभुतः ॥
 यमययमर ०५ भुदकः भु
 यकः भु वसुवभभु ॥
 वसुवभभु भितर भुभुतं भुभु
 यइवसुवभभु व कभभु
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं
 भुभुतः ॥ यमययमर भुभुतं
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं
 भुभुतं भुभुतं भुभुतं

यमिन्नुत्तमभिर्गयन्मभुविद्वज्ज
 यमं नृदेभयत्तु मभं कृत्तु भुदे भः
 पत्तम्विदीरा सुद्वज्जवभुवि
 उक्तं भवेत्तुः पत्तुः दम्भभु विद्वज्ज
 के सुविद्विन्मभु पत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु उक्तं भवेत्तुः पत्तु मभं
 यः पत्तु पत्तु मभुत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु पत्तु यः पत्तुत्तु पत्तु
 यम्यमभु पत्तुत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु यम्यमभु पत्तुत्तु
 यम्यमभु पत्तुत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु यम्यमभु पत्तुत्तु
 यम्यमभु पत्तुत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु यम्यमभु पत्तुत्तु
 यम्यमभु पत्तुत्तु यम्यमभु
 पत्तुत्तु यम्यमभु पत्तुत्तु

धनं गणनादुत्तरं गणनादुत्तरं
 मन्त्रादिनां सुवैभवं यत्रिंशत्तमं
 मन्त्रं मन्त्रविशेषं मन्त्रमन्त्रं मन्त्रं
 यत्रिंशत्तमं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं
 कृतां कृतां मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं
 धीं कृतां धीं कृतां धीं कृतां
 यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं
 मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं
 मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं
 धीं धीं धीं धीं धीं
 मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं
 यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं
 यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं
 यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं यन्त्रं

पुनः प्रउं पविरे मविरे नीय न कं ठलं
 त्रिं मे मेवे हः रुं थवी उ भुद
 दधि हः सुप भवे न भुय नी य उ हः
 भवे न भुय द भुय प द नु य द भुय म
 म ग म ग ए न उ ह उ उ ए व भ भु ॥
 त्रिं द न व म व म मे वि भु म मे य भि
 त्रिं उ उ न भ भु उ उ त्रिं ठ नु द मि
 ठ नु द न ग म य रु रु वि दी न थ र म
 कं भ न भ न भ न ह मि भु रु म उ भ
 ० भु य न न त्रिं य य रु ह मि
 रु रु मि उ भ न भ म य र न वि मे य
 नु द य म नु ती म य न न भ न य य
 भु व न भ न रु कि गी न ग वि ठ भ न

भाया जीते भा एव भा कुं ए न म रीं
 भाया जीते भेद वि न सं भु वि व कुं ॥ १ ॥
 नि ए सं ये न वि य नं थ रि प्र लि व न
 र भे र रि क उ ले क र म ॥ २ ॥ अ ठ
 व क व भ ट य दी र ठ व भु ए क र
 भु र रि उ थ म भु ए य नं ॥ ३ ॥ अ ठ
 मु मु उ मु म उ उं पु ॥ ४ ॥ अ ठ व न
 भं वी र भ म थ भु र म रं ॥ ५ ॥ अ ठ
 व न र धि उ क र थि ल क री भा य
 जी ते भा य व उ थि थि ल र री ॥ ६ ॥ अ ठ
 न भु क र वि उ उं थि क र री ये न
 भे क र वि उ म उ भ द म री ॥ ७ ॥ अ ठ
 क र ल क उ जी रं थ र भ थं ल क रं

[illegible]

कश्चिद्दृष्टिभूतं गमिचह ॥ भु
 उच्यते भामिना ० धर्मपुत्रश्च
 भद्रं लभेत् ॥ सप्तसुयादि वृत्तं
 सुप्रिभुत्तं लभेत् ॥ भद्रं दत्तं विभुत्तं
 भद्रं भुत्तं लभेत् ॥ सुप्रिभुत्तं
 वीभक्तिः भद्रं वदन्तु विभुत्तं कश्चि
 वदन्तु भुत्तं सुप्रिभुत्तं वदन्तु
 लभेत् ॥ सुप्रिभुत्तं वदन्तु
 हः ॥ उच्यते विभुत्तं यमप्रिया
 भिभुत्तं लभेत् ॥ भद्रं वदन्तु
 उच्यते भुत्तं लभेत् ॥ सुप्रिभुत्तं
 सुप्रिभुत्तं लभेत् ॥ सुप्रिभुत्तं
 सुप्रिभुत्तं लभेत् ॥ सुप्रिभुत्तं

सुप्रि
 भुत्तं

एक... मसुरे मन्त्रमभीवगाउने यमु
मनेदविभ्रति कुते मन्त्रमथयति उ
मुधुधु यिडा रुव येमुप्रि कुव वीज्य
दविभ्रमविवमति उम्पवकमी
मिने सुप्रिमव उदवद उधधियेद
विभ्रितः सुप्रमुने मेमिध विमु
ठिने वरुतिठिः उमेमेमे डधधुनः
मिडिमु जिडुमगा मकुपयिमुपु
रुदेयधधुमुप्रि मवडा धुनकुडा
मिवमीरु मङ्गीरु धुनप्ररिण्डः
पुदरु यधुमेयधुं भठलीकुड
भठमि धुनधुं उरुं उरुं उरुं
धमः उ भुन वधधुनरुन नीय

114

विवाहमिस्त्रमन्त्रां मउतं प्रोह्यतः प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः
 मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः
 मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः
 मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः मउतं प्रोह्यतः

उत्तम विरचितं मङ्गलम् सुहृदवश
भिद्रुं प्रनभः भुक्तं सुहृदः प्रहृष्ट
सुहृदं अग्निप्रतिपद्यते उन्मत्तम
कल्पयामि नमः उत्तमिकुम्भ पार्श्वे
गिला मंचमदराणि सुप्रियमिमिष
हृदि धेरुमभुरैः सप्रयेमम
नुभाजितपिठकुम्भा उद्गतः मेघी
लेखक ३ सप्रये वधवे अक्षय
वादनं प्रत्येत्य कुम्भविष्टः इन्द्रो
सप्रये प्रभुपतये प्रत्येत्य इन्द्रो
सप्रये सुमुखे सप्रये पञ्चमाक्षय सप्र
ये उद्गतमये सप्रये यथित्तये इन्द्रो
कुम्भमस्तु सुहृदः पात्रं प्रभुलिः
विष्टये वड्डने हृदयमीन्द्रमुभी दमि
मिभुमस्तु या उपमेदीपया मुक्ता ॥

[illegible]

वृत्तमः सप्तद्वयं यतिभिश्च वृत्तं
 वेसु नरं चक्रं नृपाय भूक्तं
 निमपतिष्ठत एष्टुक्तं निभूक्तं
 यतिवेसु नृगीयं न वंभमदभभा
 कृष्टं नृयं नृमदेता नृयं लभभा
 मृद्वेता मृद्वं भूतिपाद्वेता पमु
 यल्लयं नृतां मंभमभूमः देहीतद्वि
 ल्लयतं कर्मा निभूमिष्टा कर्मा वृत्तं
 नृवलेकं नृमसु वृत्तं मृद्वं
 यतिमृष्टं नृयं नृयं नृयं
 वृत्तं नृयं लभभा मृद्वं नृयं
 वृत्तं नृयं नृयं नृयं नृयं
 वृत्तं नृयं नृयं नृयं नृयं

येयुवकी पविर्देवउतउदगयमेठ
 विधुमउतियेनयेयमेठविधुसति
 उगहमडादः उगडादिमुकुति
 यमुहमवामवदमुनयमगीउन
 लमदमायुमुविमुउममउहउग
 हुंहुगदेति उदगयमेठविधुसति
 तेउतेगहमहुंदवउगयमेठवकुम
 सिधुतेहुगहयाउतेम्वलेकामभसु
 उऊभूदवैरामययिवाउमम
 मुहदंमादिनहयाहोतिधम
 रिगहउहउमेमुकभयमुकुध
 वःभुहंउदवामिधुउमकुमु
 वमंमुभऊभूऊतिऊभूऊह

[illegible]

डि दमन्तुग लि कृत्य न सा नृग
 संभी उभे उ सुकृत्ये म्वे दम कृत्यं
 ठि कृत्यं थ ध्वने सुधा धुता थद उ थ
 थने म्वे भुने ले क मय्य नृ दः भ
 सुष्टा म्वे यि ग सु कृत्य मव थ ध्वने
 सुधद उ भुने ले क मति नृ दः भ
 सुष्टा ग सु ति य ल वं वि सु सु सु य
 मणी उ ७ भा सु व ल उ य ल म म ति
 भुता य उ म म ति म ति भुति म्वे य ल
 थि द य ल्ले कृत य ल्ले भ व भु य ल्ले
 द य ल्ले य ति य म्वे द द थि थ
 मि य उ म्वे य ल्ले म ति भु ति य सु द
 ल्ले कृत य ति उ कृत य ल्ले म ति भु
 ति य म्वे म्वे म्वे थ य मः कृत सु सु

धिक्कुय सुचिचकति यकुंयि
 यउकलु यङ्गभा विमैभाहः थ
 चउ यमसचा हिरमभयैः कुलुय
 सुङ्ग सीति दभा दुरा विहन्
 न्नास रगमैभीः मरुमुकुतिठिरव
 र्वं मुययति उल्लंभुमुउर
 भावन्नभा मुचिल्ल रगरगत्र कुउउ
 ययतिः सुङ्गयल्ल रयक्रभा रुः भू
 मुति मिगुभा मसु मिमन्न उमीमु
 भूगुमीमु वैमीउ मुमिउ मक्रि
 उ उयैयविमु हिरथ मुममक्षिय
 विमल्ल कुल्लं भद सुपभी दैयभु
 हुङ्ग भूह भिरा भूमुयभयैयिद

वसिष्ठो विविक्तमपि भुवः सिद्धवत्तु
 गिराशुनः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 सुकर्मवत्तु विविक्तमपि भुवः सिद्धवत्तु
 लति यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 सुयभयति उत भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 कर्मवत्तु यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 उत भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 वत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 कर्मवत्तु यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 यः यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 कर्मवत्तु यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु
 यत्तु भुवः कर्मवत्तु भुवः सिद्धवत्तु

वेडा भुभच यम विमिबु दुल्लवम
 ति उम्भु दुल्लु हेवम विहे विविमि
 वेरमभुद नलील डीडुयमडाणव
 गेवडभुली ति मयुमिनेभुवलमयी
 यडा पिचै दुल्लु भा मिडे विगभूम
 भडलिभुतयति उमम सुजडा मिह
 केवडभुमग मदीकं मयुमिहभु
 वमलभुय सुभुहव यविरीभुत
 रिमंभदसुडा एणउमु भुभसुति म
 चाणधमवयल्लमहः भुडा यति म
 सुतिभुति उमुभुजा यभचकये उमे
 बुडल्लयति परिगय नय दिगवद
 यउयभुमुगुद चमीह उडयकिमि
 मम ति उमुमि सुददव एयसुम

मिथियारयति मयनयल्लुत्तुदय
एयत्तुभरुथगीदमुमैकुमिवकुमै
एभरुमुमिकुमभुष्टयमवैदुमयी
यत्तुभीदउयदमुभरुष्टयत्तुमीक
मयैतिमीकितैवएयकवति यःभु
ष्टयमयीत्तुष्टनभरुमीकभुष्टभु
यमरुमुभरुभट्टवष्टुदुमनकुदु
ल्लुदविःभवएयकुदुयल्लुष्टु
रुमिष्टुष्टुःमभरुत्तुमैकवतिष्टु
ष्टुष्टुभरुभुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु
दुष्टुदुमैमभरुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु
कुत्तुवैत्तुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु
मयैष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु
यष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु

श्रीभूतेश्वरति उक्तमाहुतकु तिरुमे
 वृद्धले ३ एतेताभामेवमेवडां नृ भ
 रिभुतं भायुष्टां भुलिकभयिदि ॥ यद्वत्
 उभयिष्टा सुदिपुत्रय ३ तिरुदिहि
 भुक्तवभवितावदिपुमेभयभक्तिः सु
 प्रेत्तकेयुदीदिभः भुक्तुमेवरादभ
 इतुवभवेणियः विसुमेव भुदीत्तमा
 भुष्टायभुष्टभुक्तभुमेभक्तयेतिरुमुक्ति
 मेवतिरुत्तमेदवि उभययंभयिष्टांयु
 वत्तमाहुतीरुये सुगक्तियुतेरुभः
 सुष्टायभुष्टभुक्तभुक्तभयवभुक्त
 भेभ सुष्टादिमेवभेभ यः यवभवे
 रमुतिभक्तिः भुक्तुंरुभं भवेभभुक्तभ
 सुतिभुष्टांभुक्तभुक्तभयवभुक्त

ॐ शान्तिविदियेनः दिक्पुत्रवमवि
 इवमिभुममयममिः सुवृत्तप्रसी
 दिमः पुनतुभास्वराणां पुनतुवम
 विषया विमुक्तवपुदीउम एव
 मः प्रसीदिमः पुष्टयमुष्टय
 मिभक्तमिभुमुक्ति म्वेहउउमेदवि
 उयप्रयेथगिप्रउं युवाङ्गमाङ्गरीवृषे
 मगन्निर्वृतेनमः सुष्टयमुष्टयमव
 नमउमपञ्चमुक्तवमम यः यवम
 नीरमुष्टयिभि मंष्टुतेमं क्यमभु
 कीष्टुदेकीरं मयिभयम्वं मयिभु
 वमिभुष्टयः मवमुक्तमः दिवुक्त
 वमममवङ्ग शान्तिविदियेनः यवम
 दीष्टुयदीमवङ्ग दिवुक्तमः य

म्य

म्य

धिदिमं कृतं रमं बुद्धल्लभुमं कृतं यव
 भवति मिसुतः उभुल्लभुमं कृतं
 भवति मययतुं नैव विवृणोति मभयति य
 उभयपविदं उभयपुनरीभय उभय
 दभयपविदं उभयपुनरीभय उभय
 भयपविदं उभयपुनरीभय उभय
 विवृणोति ययतुं नैव विवृणोति
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय
 उभयपुनरीभय उभयपुनरीभय

नमि त्रियविस्वयुनिमिषामुमुने
 हृदुतिगुदाउ समुष्टिपुत्रसुपिचम
 मंडकवभादीहिरुंभुनमि रुदसुं
 गणीउंथयंयसुःस्तुतःउतं मुयामि
 उमुमंयहृदुदवभादीहिरुंभ
 नमि हतभुयैरयेभुतभुयभविमु
 स्वेहःभुंननुउरुयःभुदगति
 यथं सुहृगमुमिभुतउंलेकउरु
 वभनेहिरुंभुनमि यवभादीभुमु
 यनीदहिरुमुतिरुनं भुंमुमुमु
 रुकयतिमुभुतउंमगमुति यवभा
 भंरुदुमुंमुंतिभुनउरुभा पिउभुमु
 यमिभुतिमीरुंभुयिभुभुनं यवभा

थिइऊवसुयसुसुभरभुती थिइऊवसु
 तिमुतिनीरंमथिभप्ररुहं विसु
 कृष्णभुतंभीउभुः कृतमकं उं
 मभाभु मरु मउभुयं यराभपद
 सुनवैसुमवसिया उइमीवृहतीः
 विभुवभुवंयुसुकेमभइप्रभवम
 सुमीचरुठियेकमरायुमंभचभसुरक
 भउरुगिडिल सुवयवमकर भिसुतः
 एउडासुभउभेकेकेमभचरुभिसुमं
 पउरुकेभउभु कककयषुः
 यः पथिः विगकुनः सुडासुवडा भुवडा
 मः पथिः गण्यडीकुनः परभापिचभुसुत
 उ सुहडीनंरुम एभमथिरुगसु
 एभउवः यथयः यथिचयुभुदसुव

पुनरेव नमोऽस्मिन्, त्रिभुवनेषु मया स्तुतिः शुभाशुभयोर्यु
 तं यः पठेन्नित्यं वीर्यं वीर्यं पुनरपि यः पठेन्नित्यं वीर्यं
 तैलं नीले त्रयि त्रयं केचिद्विद्वन्मया ॥
 १ मुकुटः गायत्रीमुकुटः दमस्त्रिय
 २ त्रिकुटियमुकुटः मया मया मया
 ३ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ४ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ५ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ६ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ७ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ८ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 ९ मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः
 १० मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः मुकुटः

५३३ काली कुमारी कुमर कलिकया साधु भाला साधुती
मकुं प्रोक्तया विक्रि ३ वरना साधुनेर विमला मनुष्य
वकुं यानि ३ कुमयुगा भुक्तु भाला वदती मन्त्री वी क्रिष्टु
द्वितीया विना साधुनेर साधु ॥

रावा द सुभा रयिभा नयुधुतं केरीम
उमा न यरी सुयुगिच परमं कंमं न

६५॥ ५
साधुनेर
ईक विना
मिह मविना
नवरा नय
ईक देम

यह छिपुति तिमुति यारं वंर ॥ नि
रावा मं म सुभुतमः कुं कं कं कं ॥

सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतमः ५५

पि वरुधु वरुधु उथ सुभु वरुधु

सुभु उरुः लवरु मभुति ति मभुतम

उथा सुभुतम उथ सुभुतम उति मं वरु

उवा सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

उवा सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

उथ सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

उथ सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

उथ सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

उथ सुभुतम उथ सुभुतम उथ सुभुतम

महाराष्ट्र इति उपरान्तं नति मीतिं प्रकृतं नैव नतिं विवक्ष्यते
उपनीयं परमः वैजलीय उति विविक्तं मन्त्रं
मन्त्रः सुता इति उपरान्तं मन्त्रः ॥

एनियुभययनमयति ययवम
भुक्ति कुतयनमिठविधुतेनमऽतिठ
ज्ञाभष्टमेव नमभुक्ति मन्त्रमन्त्रः
मूत्रयनमऽति ययव उदुगक विम
ति उद्वेनमभुक्ति ययव उद्वेनमम
मः इयडमलेक सुभय मन्त्रमन्त्र
विमययनमभुक्ति ययव उद्वेनमम
ययव उद्वेनमभुक्ति ययव उद्वेनमम
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र

147

अवधे ४३ गङ्गा कृतवद वचना दंभया वैकर्मिका भयानक शक्ति
मुक्ता च धवा वदना नगयस्त्रिधवीता उक्ता शैव पश्चिपगवा
वदना मङ्गल मङ्गल दिग्गु भाभङ्गा पातु निरुं द्रिडा वदना वृ

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

शुक्रवैभक्तपुण्यतुभक्त

एकैव त्विभक्तव भवैरुक्तमिदं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽयं ॥

सुबुद्धिद्वयवचनश्रीरामदासि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

कामभूमि सुखायः सुखाय १५९

भद्रं गये स्युः भित्ति गणपतये

भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं

गणेशः सुराधपतिरिति सुतमन्त्रः

शालग्रामपूजोत्तरादि शालग्रामपूजा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ भूभुवः सुवि विविधं यमुहक श्रेष्ठं मेव विष्टा अरवि भागं अष्ट

वयसकः सुखदं हि विष्णुमूर्तिं भुत अक्षं पांशु ॥ १० ॥

एतन्मसुमुभयुतिष्ठि सुमुएवएतन्म
 माति उमाएदुगसुं सुं एतयभयतिष्ठि
 यति ह्यतिठिठिवडुयन माति उमाएदुभ
 लिह्यतिठिठियकवक रिणभुवसभु
 उतिगएण्टि रिणभुएण्टि मकयुए
 उतयवैमक ये सुभभुममवयमि उमा
 दुभमवयमि भूतिं भियेकवक सु
 भुयएणभयभुवीरे एण्टि भिति य
 एणभयभुवभुएणयवीरुन माति उ
 माएदुगएण्टिभुवीरे एण्टि ठिक
 भितिकभयः यल्लेवभुति यडेउन
 यल्लेवयएण्टि येणमभेदुनयमि
 ति येणमभेदुनयल्लेव यडेउनयल्ले
 वयएण्टि उमाभुडेउनयल्लेवयएण्टि

विष्णुमि मतिमि वलममि

लुभुभुदं येन कमेठवति यापवदं
मउकुलभक जव सुवभुभुति भद
नयकुभुद ३ ५३ कहुगव
उमरुतीभवक मरुलभुमः नयकु
मुतिलैदेभेयिनकलभदमहः
मात्रिकभेयवउद मयुभुभेयउ
उम कहु मिहिकभसुययभमम
भमरउ भदकभभुमभुयगउह
भभुमालिठिः कीरकभभुहिसु
दपीभुभुमउश यरकभभुमविह
मीकभः कभलभुय सुंरुहभमी
रउकहभुय कभभुमभेयभनभ
भुभुभेयवमविधायउ उरुउउलिह

150

किञ्चिदुद्देममभउत्तिउः भूठपुंम
 दमभ्रिउत्तिउत्तकदा विमगल यय
 सुवउषकद विहं भमयिगसुतिः
 येनयेनउत्तपुनलसुदेनेमभमग
 डा उमेवकभमभ्रिउत्तिभइमेवमभम
 यः मेवयडीविगडीमभविहय
 विहमिदीपुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
 उमेवउत्तउत्तम भउत्तउत्तिमपुवः
 गगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
 ककुभंगउत्तिकभभुभसुतिं वकभः
 भवभंगउत्तियसिभुपुगुगुगुगुगु
 भउवः वरगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
 भुवगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु

152

कृष्णकवचः कुंभमधिष्ठितं विष्णु
 वेत्तु कृष्णं विष्णुं सुततत उम्भत उम्भ
 कविषा विष्णुमवयं शुभमयतय रयी
 ॐ वदियमः थितरुद्रुद्रा निभा
 विदुः मउभा शुभं सुतत उम्भ
 भउभउ साः मयै रयी मउ सुद
 १५५ दिदुः सुविदुः सुविदुः सुविदुः सुविदुः
 सुभा लमविष्णु वदियमय शुभय शु
 उम्भकृष्ण उथिदुः सुतत उम्भः उम्भ
 कृष्ण थितरः मयै मयै वदिय शुभय शु
 शुभय शु उम्भमउ उद सुव सुविदुः
 वतु उदभा उ सुविदुः थितर लद
 नकु उम मयै मयै उम्भ मयै उम्भः

सुतादवीधिभयता निरद्वीधुषा
 विभक्तवीरगुणान्न मुनिधुषा
 उः वृथा धितेरेभक्तता भवः भुभक्त
 सुवेमंदमः मुनिधुषा न उभेउदव
 भद नरा मंभमंभीपीयं यमुनमुः उ
 सुगभक्त उ उ दयव वृथिवृव उ उ वृ
 भुता भभ व य नि विम द उ उ ये
 रिभाभुए मुए इय म उ उ विवभु
 उ म भुभा उ भय म उ उ मुनिधु
 यकुवि ल मः यमुनि क उ व द नीय
 इ उ उ उ उ वृथा भु उ उ विवेम उ
 म्भे उ मु धि उ नि सु उ म्भे क उ उ म्भे
 नीथा भु उ क ए य उ उ नि उ उ उ
 कुवि ल वीर यमा उ उ नि ये मा सु य

155

[illegible]

मधमयिनेरगययभुद भुताइ
 शु विभवेभत्रमगय सुप्रिभीक यय
 दुपेदग्रे • उभेइलेइ सुउरिक्कयव
 यवेयदु • सुप्रसुयदि हु भदयभ
 म • मंत्ररवी रिमसुभुमभसुयवेम •
 उकुमउभुय उमुंकीउ उकुयमउभवे
 सुप्रिभीक उभेइले सुप्रसु मंत्ररवी
 उयेरुं सुप्र पाङ्गायउरुवउरुः क
 म वसु सुइरुइ रिक्कय उयभा
 भदभुय उरुं कं उयभुतिमठवउं
 वेसुइवभु वेवउं उक्कयिं भुप्रग
 यः सुभुक्कययभं प्रलंउवउ
 कसयठलव रिदिः
 सुप्र भुभुइउ उदयवः यदनिनी

157

एतद् वदन्ते कणाश यमस्य उक्तं य
 विवश्चते स्त्रीधुमवे अदय भक्तं
 य विवश्चते मयः किं हं मम गम
 हः ममव भक्तयः य मम भक्तयः
 उक्तं ममयः ममयः कथं किं मदि
 बुद्धय उक्तिवः मम यिदं कुरुते व
 धक्तयः भिन्नं कथं किं वक्तुं
 य दयः ममयः ममयः मयः
 य यधक्तयः भक्तयः ममयः
 भक्तयः कथिक्तयः भक्तयः ममयः
 कुरुते ममयः कुरुते ममयः १ उ
 क्तयः ममयः भक्तयः विक्तयः
 ममयः ममयः ममयः ममयः
 ममयः ममयः ममयः ममयः
 ममयः ममयः ममयः ममयः

159

य भुलभुय भुलकय कसुधाय
 गेउमय उउवे वभिभुय उगम
 य विभुवे भवने शुद्धय मेवड
 य वेदभुय उमरुम मद्यय लि
 यियउय माउउयय थरामाय
 वृद्धल मरुय यमय सुभभु
 य मवलय वृद्धय वेठाय वृभ
 म एभभुय कणल्लयय विभु
 भिभुय वभिभुय केमिकय
 गनुय केभुय भवउरभुयय
 मगभुय सुवल्लुल्लय सुयय
 सुवभुय मेउकय दगीउय क
 उययय एवलय थलीउमय

क२

मभउव याल्लवल्लुय भुगउमे भुए
 थउय ससिउ मिहै मभुविंसति व
 कउहः उकु मिहै रूमलिक थाले
 हः उगु मिहै रूमलिक थाले
 मभुय मभउउगय दगीउम० यकु
 म० सुवम० सीमम० मभुयिमभुल
 य मभुयल्लुल्लुः हउव मक्रय
 मभुय वभवै हल्लय हभय यउ
 उरिगहय थउउवय सुकुवमम
 सुभय सुवय मेभय भाविह
 सुल्लय हल्लय भुउयय भुल्लय
 य भुकिमे सुयि० ममि० उरि
 ति० यकिमे० वयह० उउर० रिसा
 व० कुच० सुयिमिमे भुल्लय सुभ

[illegible]

[illegible]

कउरुनरुदुंरुनं उअउंरुठविमति
 कउरुनरुदुंरुलमसीविमलठवि
 नद कउरुनरुदुंरुलमसीविमलठवि
 थिउिभानुवं थुउथेहमभामुठउं
 कुउंउेरेठविः कउरुनरुदुंरुठवि
 मवःपिउगल्लमद गउरुचधुम
 रीसुमुगुगल्लठविमति मुठनं
 उअकलमं भउरुः सुउउमग
 सुयं कउरु सुउरुधुधुमउ ७
 डगयठलिनी लकविमतिः
 मेरुधभानुं मवठिपिउउरुम
 भवभउरु सुमिउं गयउरुमः
 उ सुयंथउयवि थामयउरुययी
 उत्रैवमः उ उरुयवि रुसीय

नो.
 ७

२११ भित्तुमी० उन्नः नैरुः ३ चहु०
 वरुल्लु भुक्तुयः सुन्नै० वउर
 लीनमी भउर ॥ जं वरुल्लु युउके
 कथएरु भम० सुभउर युभु न
 वाडय ॥ सु० सुंरुमी उं सुनिमले
 थम्मरु सुं भुमी रं सुि करं भक
 रभनं सु० नैरुं भभउर रिभीरु
 भमरु सुं निहं थिउ ॥ भुक्ति देउ
 व थहउरु गनु कउ थथभ ॥ १६८
 यै यभुनयै विउमुयै गय वरु
 भमभुहै रमरुयै भित्तुहै के कीरु
 मरुठगण्यै विथामयै मउरुहै
 भमभुहै सुनउरु गणयै कलि

ॐ नमः शुभं नमः प्रपत्नीयस्मि
 बुद्धिमान् यै **प्रतिपादयता** भगव
 ॐ नमः वैतरणी नदी प्रपत्नीयस्मि
 ॐ नमः वरुण उग्रपथविष्णवे ॐ नमः
 ॐ नमः भगवते भगवते भगवते ॐ नमः
 ॐ नमः भगवते भगवते भगवते ॐ नमः
 ॐ नमः **नमः** **नमः** **नमः** **नमः** **नमः**
 ॐ नमः कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु
 ॐ नमः मङ्गलम् मङ्गलम् मङ्गलम् मङ्गलम्
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः
 ॐ नमः नमः नमः नमः नमः

[illegible]

रावदने एहदिना. यमची
 कनचकुलभतीभवइप्रणिउः
 सुगताभाणुदभाताभुभीतावर
 मभुमयाणिगीमभममचीभु
 उमभुभुपरिभुतः भुठगयभु
 सुभभचकभदलभुमः भुमी
 लकसुभेयण्डप्रणिउभवप्रणि
 उः सुचदयभुदंरवीभुठीलै
 कभातरं भुदंरिवनीमचीगव
 नैभुगकिन्नः सुभुतभुविलीम
 चीभवयलभुवडिनीमविदंभ
 चमवदंभवकुभमगाभमभ
 यकुभमपासुतकुभमभुव

[illegible]

भिन्न है भाव है गमन है विदुष
 गेह गगन रुद्र मन्यु मेलन
 धिरेह लाल लाल पिलेह अत्र
 धृ मी गमन मी गमन मधुमय २५
 उमय भोगय भोगय उमय
 रुमय वगदय उमय वमह उमय
 उमय यम वम वम उमय यमय रु
 क्रि उमय रुमह वम उमय धिरेह
 मयन भवती रुमह नमय लल २५
 व रुमह रुमीह एममय गमनह
 एममय यमनह एममय यममह
 नमलह मममह रुममह एम
 रुम विममह मय रुमिह मय

कृमः पुतिगुदीरु कृमः मभुतुं
 भाविमता कृमरुतु पुतिगुहृमि
 कृमभुतुतिउतिः ३३५ ॥ ॥ ॥
 उद्युसुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 यता कुमभुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 तिलेकृः वृद्धविष्णुसुतुतुतुतुतु
 रसुमभुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 सुसुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 भायुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 दुःलकुथालसुतुतुतुतुतुतुतुतु
 धा सुमिहवभुतुतुतुतुतुतुतुतु
 गगभुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु
 माभुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु

त्रिकुण्डलव गायत्री भा विडी मभर
 भुडी कपुर्गुस यदु जम म भन विव
 सचलः उभवे उभवे यम भन यम भवे
 मयै भुगुरः गयुतुतः विधायम
 भभुता ये भुगुरः उभवे यः भुभवे
 कृतानु भन भयं भुति भुतं भाभठ
 गव विभु चक्रु भे राना भुतः भुत
 पय विभु व भिदे भ भुत भुत भुत उभ
 उभ विभु यम भन भुत भुत भुत
 भुतः भुती मय भन कलि कलि
 गङ्गा गल्ल भुतः य विभु विभु भुत
 वे मि व ठ क भुत गल्ल भुत
 भुत भुत भुत य विभु भन भन

भटवसिने मभूवसिनीये माता
 वंते **मवे** नड मयभुगशरी विमुगे
 वभभुगड मडड मड मड वं ॐ
 मंरदि विधीमड **इदमड** मय
 मययडा चेर क० क० लीग क्रभर
 यल्लय विमभुगड मय मं क० ली
 भुमः मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 डकड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड
 मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड मयिभुगड

नीले वस्त्रे चक्रेषु कीर्तिं गिरि गिरि
 पुत्रे धामसु सुतां पुत्रे धामसु
 दे उग्रभार्य कण्ठसु रं यत्तुतिभ
 सुयन्ता यत्तुतिभामुगीसु विह
 भादीसुगी वद्वि नद पि मन्त्रि
 पि सुवदनीया पि अदं वरुं व
 पुत्रे वीरं उक्तं एतवमं नैवति
 भाऊं वसुवल् उमन् सुपि म
 रं रं व सुभिभं कभीभं सि
 कीयल् नरुवमं पुनकन्ता भेरी
 न धयेयन्ता सुकमायन्ता व
 वयन्ता दिगन्ता दिगन्ता
 न कन्ता सुधीयं मकल एव

[illegible]

[illegible][illegible]

1892

[illegible]

[Faint handwritten Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side.]

क० धर्मी ३ भद्रक शुभ्रुतं ३ भर्तृ
 उमभं च उ विष्णु सुदरक सुधः च द
 भद्रि सिद्ध मन्त्र सा उ य धर मरः
 भिद्रा भद्रा भिद्रे मन्त्रे य मा य सुभूमि
 चला नयने य य न ह भ च भिधु
 भद्र सुधः भिभद्रा ग म रु गी उ य ह
 व ह्रु भु म उ मः लि पि उ सु ग ले श
 दि वि सु भि भद्र म गी म यः क ह य दे
 स ए व लि धा वी उ भु म भद्र वः य
 म सा भु भु मी उ यः प डि म म रु य
 मी ये य धी उ य य म म
 मी रा भद्र मी रा म उ मी रा म भु
 मी रा उ य मी रा भद्र मी रा व भ्रव

क्षीरा च भुजङ्गीरा भुजङ्गीरा यमक्षी
 रा गजचक्षीरा गजचक्षीरा धिमक्षी
 क्षीरा भिजङ्गीरा भण्डक्षीरा वि
 क्रयक्षीरा मैत्रक्षीरा वैश्वक्षीरा
 यैश्वक्षीरा दण्डक्षीरा भवतश्चक्षी
 रा दधिमेवता दधिमेवता दधि
 सुकंभि दधिभुजङ्गीरा दधिपङ्कीः
 सुधुभुं भट्टाथाहं दिवत्केसं
 भुजङ्गं भुजङ्गं भुजङ्गं भुजङ्गं
 कथिलं वैहं याम्भिमिपं एतन्नि
 मरिं वभिभुं भुलदं भुलदं कसुधं
 सुवनेष्टुं विष्टुं यममं यममं
 मरं नक्षी किं वडं कण्डा एं म

[illegible]

7025

[illegible]

दे शुभसुभममम सुपुंयमदभाऊ
 भिदुय **यमु** मिमसु सच **वमं** म
 कुम **स** ए **दं** पं **रु** न **सुं** मि **गु**
 सु **म** **म** **म** **च** **रु** **भि** **दु** **य** **उ** **उ** **म** **उ** **रि**
 शु **रि** **रु** **म** **अ** **व** **रि** **रु** **म** **वि** **म** **रु**
 सु **प** **न** **मि** **या** **ल** **क्री** **म** **च** **रु** **रु** **रु** **य**
 म **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 वी **म** **म** **य** **य** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 रु **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 व **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 म **ल** **क्री** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 व **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**
 रु **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु** **रु**

पदगयैतमुभासुविभूयसुत म
 मयैवदिभिडांमयमवउमभुते
 भयसुमिभदभदभक्रययसु
 तयमगीधुतमुमयलक्षीम
 भुदुतमुतमय मयमयमय
 मययैवमयमुम रंयैवमभम
 मभुतकिंमुकिंमकुदु सुतमु
 वकियुतमुभमंक्रुमयम ५
 विगुदुमिदुविदंक्रुभुदुविम
 यतः देभमभमिदंक्रुभुदुमय
 रंमभुत मक्रुमक्रु तंहीम
 मंकीक्रुभुभमंक्रुः मभभुतक्रु
 विक्रुठणिनि मक्रुक्रुदितः मयक्रु

उत्पला विभुम् ३ परिभुम् ३

मन्त्रवच्चप्रकलम

मन्त्रवच्चप्रकलम

नः * सुभुम् ३ यः ३ रुग्ण

उत्पला सुभुम् ३ रुग्ण

मः ३ मन्त्रवच्चप्रकलम

नम् ३ मन्त्रवच्चप्रकलम

यन्त्रवच्चप्रकलम

वदन्त्रवच्चप्रकलम

यन्त्रवच्चप्रकलम

यन्त्रवच्चप्रकलम

मन्त्रवच्चप्रकलम

कन्त्रवच्चप्रकलम

सुभुम् ३ रुग्ण

पुष्कर ३ अर ३ उर ३ उरकुप ३ म
 र ३ भूमर ३ कद ३ वम ३ अउ
 य ३ हुं ३ ह्रीं ३ ह्रः ३ दण चंभे
 राभ्ययनमः **भद्रकलस** ३ उभ
 ये मनये ठरु कल्लु भुभये भुद
 य सुकद दे नन्दे भुये निकरु
 वणीमुद रत्रिने नभ्यये मधभु
 ये मन्त्रिने मभ्यये भुमभ्यये म्द
 हे भद्रकलस यभुदये कगल
 भुय म्दरुगय वभुभुययय
 हल भवेष्टिष्टुष्टिरमः विष्टुष्टि
 म्भतयेरमः क्लीकं कुभययय
 मः ह्रीं ह्रीं मः भुदयययय
 मिष्टाष्टिरमः विष्टुष्टि नयययय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय विष्णोर्नाम
 कीर्तनं सुदुर्लभः पुण्यं नमः ॥
 उपानि मन्त्रं वासुदेव नमः शिवाय
 वन्द० नैऋत्यं० विष्णुनाम०
 भक्त्यै० भक्त्यै० विष्णुनाम०
 भक्त्यै० विष्णुनामः सुभक्त्यै०
 गच्छेत् वासुदेव नमः विष्णुनामः सुभक्त्यै०
 लक्ष्म्यै० नमः **सूक्तं विष्णुनामं**
शिवाय नमः भक्त्यै० कालाय नमः
 भक्त्यै० नमः भक्त्यै० भक्त्यै०
 भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै०
 भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै०
 भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै० भक्त्यै०

207

[illegible]

ॐ अ० म० स० वि० य० म० क० भ० म० अ० इ० क० उ०
 म० वि० उ० म० उ० क० उ० उ० व० ल० उ० य० म०
 मि० उ० अ० उ० अ० व० ल० उ० य० म० क० उ०
 इ० य० य० वि० भी० क० य० उ० य० यी० उ० व० क०
 म० ग० उ० उ० उ० म० उ० म० ग० य० म० क० क०
 क० द० म० य० म० य० र० द० द० य० म० क०
 इ० य० य० गि० दी० म० दि० द० य० म० द० म० उ० म०
 य० भी० द० यि० य० उ० य० उ० क० क० क० क० म०
 य० य० उ० म० क० उ० म० क० उ० यी० क० क० क०
 म० क० म० इ० वि० क० उ० उ० क० म० म० म० र०
 य० म० र० म० ग० ल० म० म० क० म० म० उ० द०
 म० म० उ० क० ग० व० उ० म० द० म० व० य० म० य० यि०
 य० द० म० र० उ० म० य० म० वि० य० म० म० क० व० उ०

विभ्रमत्रय उद्धय रिमप गेगीरु
 मनुभनगभन हिरे मंगुभिर्
 भिउवगगुए कलिकमुं मनुमुक
 कवलसर्गकुतथा लिथक्रा वणी
 सुविकलपुमंभु भाभिविउं विं
 ज्ञीभेकुलवणी सुदेउमः गग
 र्नीपुउयकु रं दिदयदं सुउभुं
 भिदगे ममेकु भिउययगं भिउ
 भांपीमेहु वदउंगरा विभ्रमभु
 र्नीयनिदीभदिमसैभभुरिउगि
 कये गेगीभनभभकुए कगवडीक
 कभुमउं कए विंउं नयउमः
 उवमपय सुउमविदिभुं प्रल्लु

वरुंभीउं वभंउं कभलभंउं लकु
 सिउंमउउं कंलकुीरुगयलं कल
 वभुम्वययि० ३ उंउंभेविभुववि
 भलकुंभभुवायह० भवेसुदय
 लभुउयमि० मयभकुयमि० सुद
 कुवलकुथिलकु० सुभितउरभ
 ३० सुभुतिउउवीदयसु० कंगकु
 मय कं० कं० गकुभउय भंभवि
 सुद ईनकिउ यंथकिउ अदभकु
 लय भंभभकुलय भुदउउय
 यंथकुभउय कंसलिय उंसरय
 कुंभभकुलय लिभुभुकय सुद
 मय सुकुभउय कुलनीलय कं
 मयभकुल मलिय उंसलकुभय

रिपुभुजगीसुभुधासुकरहृदयः
 उदैव लयतीमकलकलीकडका
 लीकथालिनी कनकसुभाभा
 हीभुयाभुदादमेभुते कंकडका
 वि. सुमन्त्रवामिहृयी. उत्रः मन्त्रिः
 ५. ३ री ३ कुं ३ री कडका कं री
 ३ कुं ३ री ३ भुदा उदैव भदपम्
 वदतभुजकनकविगुद भयसुत
 दिउभउदहृदिभंभुतेकन कलि
 सयैवि. हृभुयैयी. उः कलीभु.
 ३ रिदभः कलिकयैरभः उदैव
 मगमवममवीभंमगहीभरभु
 जीरभभुमु रभभुमु रभभुमु रभभुमः
 मगमयवि. विगुदमिहृयी. उत्रः

मगः ५ ३ तिंही कीमः उभरनव
 हुमगः यही ५: ३: **इव** मीमः रि
 कुमगः उभरियः भीमः वः कः ६
 उभरियः मे कः रि ५ लः मयः मः मः
 रि ५ यः वि. मः पुः उः री. उः मः मी
 ५. ३ तिंही मीं कुं कुं मुं मः मः रि ५
 यः मः **इव** हुलः मः पीमः दः हुली
 हुलः मः हुलः लः मः मी हुलः उः रीमः
 हुलः उः री हुलः मः यि दः मः पुः उ हुलः
 मः यि वि. रः मः मः कः रि उः री. उः मः
 लीः ५. ३ तिंही मीं हुलः मः यि
 मः मः मः मः मः कः यः कः यः री दः हु
 कः **इव** रि ५ लः मः यि दः मः मः

नृकडुधिल्ल उमेभुउभदरगल्लीयदि
 भामगल्लगडे गडुभुगयैवि. भाम
 गमाकदेयी. उवःगल्लीपु. उ वि
 द्वीसीरं लीभाः कणवेदरगु द्वीभु
 द गभित्तुभः **उमाउमाय** म
 कुरुप्रतिपुत्रं विदुंभः भरभदंभा
 यवि. भिदंभः भद्रकुराययी. भः
 नः भद्रकुरयः भु. उ विदुंभः दंभः
 भयल्लयभल्लयभिदंभः दंभः वि वि
 दंभः उभः **विनविनीद** धाभा
 उकु विनेयमकुदकुभुत्रविज्ञाः
 विदुंभः कविदुयगउरमु विमिवा
 दयः भुल्लयभं **भुल्लु** नभा
 भिभक्तु. उरुवद. उायकुभकु.

लेभयडियः शुभ्रनृत्तस्यैवैवै
 विष्णुगुह्यववभुङ्गः भगं मासुतं
 यमभदंभायवि. भददंभाययी.
 उत्रः प्यः भु ३ विहुं विहुलसुभ्र
 कवययनमः विहुं सुभेगी सुविहुं
 सुदं हुंभः भवदं कविधय
 इभदं हुंभः भवदं कविधय
 भिन्नी वृद्धमिकर ७ गीतं यमवृत्त
 भयंमिचं उक्तंभु. विभमः मिद
 य वृद्धः कथल्लमकवययनमः
 हुंमयिवदर. हुंमैयम. हुंमि
 कथल्ल. विभमस. हुंमययन.
 विभमय. विभमय. विभमय

धनः मिरभि रिधाङ्गु नयने न्वं एण
 भुङ्गा एभ भुङ्गुं मङ्गु के ए भुङ्गी रु मं
 मङ्गु वङ्गु उ मङ्गु यङ्गु वङ्गु विमङ्गु
 मं मङ्गु नं मं मं भुङ्गुं क मङ्गु नं मं मं
 लङ्गु क मं उ विङ्गु रिङ्गुं क मं
 मं मं क मं मं मं मं मं मं मं मं
 य मं मं मं मं मं मं मं मं मं मं
 नं वं मं मं मं मं मं मं मं मं मं
 रिङ्गु मं मं मं मं मं मं मं मं मं
 मुनिने वङ्गु मं मं मं मं मं मं मं
 मं मं मं मं मं मं मं मं मं मं
 विङ्गु रिङ्गुं मं मं मं मं मं मं मं
 मं मं मं मं मं मं मं मं मं मं

गुरुभिरनकुशं तं वामभिरवकुशं तं
 भद्राक्षवकुशं भवद्वन्द्वं इति
 मि० सुदृष्टिर्गिरिभि० भुवने
 सुदृष्टमकुशं सुदृष्टमकुशं सुदृष्टं
 विदुःशिवकुशं विदुःशिवकुशं विदुः
 भुक्तकुशं विदुःशिवकुशं विदुःशिवकुशं
 विदुःशिवकुशं विदुःशिवकुशं विदुःशिवकुशं
 यमिदं यमिदं यमिदं यमिदं यमिदं
 भगवन्मिदं भगवन्मिदं भगवन्मिदं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं
 सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं सुदृष्टं

[illegible]

य मयमममिदभुय यममममम
 दभुय वेचउययदभुय वम
 यथामदभुय वययहपुदभुय
 कुवीगयनमदभुय उमदभुय
 मुलदभुय वदनीधमदभुय
 विभुवेममदभुय **उद** वद
 मममममममममममममममम
 ययय विमययय मममममममम
 य ममममममममममममममम
 कममम **पममम** मममममममममम
 ममममममममममममममममम
 ममममममममममममममममम
 यमममममममममममममममम

कि० धरु० भद्रधरु० उरु० रुद्रु०
 ए० भुधरु० मद्रु० धरु० भुधरु०
 इयदरु० मद्रु० रुद्रु० एयदरु०
 धरु० मद्रु० रुद्रु० इयदरु०
 धरु० मद्रु० रुद्रु० इयदरु०
 मद्रु० रुद्रु० इयदरु० धरु०
 रुद्रु० इयदरु० मद्रु० धरु०
 इयदरु० मद्रु० रुद्रु० धरु०
 धरु० मद्रु० रुद्रु० इयदरु०
 मद्रु० रुद्रु० इयदरु० धरु०
 रुद्रु० इयदरु० मद्रु० धरु०
 इयदरु० मद्रु० रुद्रु० धरु०
 धरु० मद्रु० रुद्रु० इयदरु०
 मद्रु० रुद्रु० इयदरु० धरु०
 रुद्रु० इयदरु० मद्रु० धरु०
 इयदरु० मद्रु० रुद्रु० धरु०

मभवमविष्टकणक उद्धविष्टक
 कूपरमुनमिउ ३ मुभंमुउ ३ अच
 मिउ ३ भासि ३ उरु ३ थउरु ३
 थिउ ३ उरु ३ मरु ३ मुकु ३ मिउ
 भवमयउभेउमः गल्लमुदिउ
 यंरंमुगय उभाभदिउयमिउ
 यमभुयउल्लवउरुः मुभुमु
 मभउकुलमगल्लवउरुः मुभु
 मः मुभुउमः पुं भवमवभाक
 वीमरणगमीमनिराऊन अयेउरु
 ल्लवमिभाउरेपुल्लुककदिउ
 उरुमीं दिउरुउरुवभीउरुउय
 दिउयंथउमिउ मीयंउरुल्लकउरु

कथितं ह्युदितं कं माभं गणनी
 यं सभगी सिधु ठरु उमे कमरु क
 युतं मेव न कं निरि एय उ एय
 भव एय न मीम एय न गी प उ मि
 व एय न क व म क व एय न क व
 उ म र एय न क व थ र यु क एय न क
 ल उ क र क एय न क भ वि र भ म
 एय न क उ र क भ क एय न क उ र क
 म र क एय न क उ र क भ क एय न क
 उ र क उ र क एय न क उ र क भ क
 एय न क उ र क उ र क एय न क उ र क
 उ र क एय न क उ र क भ क उ र क
 क भ क उ र क एय न क उ र क भ क

यत्र द्वा मि कृत्वा एतथा द्वा कृत्वा
 जीउ एतय सु लि कृत्वा कृत्वा एतये
 ये कृत्वा म कृत्वा एतय कृत्वा कृत्वा
 उ एतय कृत्वा म कृत्वा एतय म कृत्वा
 कृत्वा म कृत्वा एतय वि कृत्वा वि म कृत्वा
 वि म कृत्वा कृत्वा एतय वि म कृत्वा
 एतय वि म कृत्वा म कृत्वा एतय वि
 म कृत्वा एतय म कृत्वा म कृत्वा एतय
 कृत्वा म कृत्वा एतय कृत्वा कृत्वा
 कृत्वा एतय कृत्वा कृत्वा म कृत्वा
 म कृत्वा एतय म कृत्वा म कृत्वा
 कृत्वा एतय कृत्वा म कृत्वा म कृत्वा
 एतय एतय कृत्वा कृत्वा कृत्वा

मयं निष्ठं भक्तदण्डविश्रुयते नृणां
 कडकनयमुभीरुकरुणकर
 सुखं यथाप्रभाममदेन विभुं
 विभुवती उभयतः भवति
 कलयाभुं मय्यथं कीर्त
 दृष्टमभिमंभिसुखमभमवि
 यमभमभमभुते नृणां विवे
 ल्यते यथाभुलिः दण्डविश्रुय
 लयनदिरायादिरासुययथा
 सुखमिमंमभुदं वरं म
 मय्यथं यदिकारिमथा
 यदिकारिमथा यदिकारिमथा
 यदिकारिमथा यदिकारिमथा

भूतद भूतद्वीरुसमभयानयरा
 याननेकमः कभुमुतिभुल्लभं
 गृहल्लभुकभंयुतं वभुभुल्लभं
 एण सुभुयदण सुभेमानं रुमि
 मे सुभमभु यितः सुभु मिवः भू
 तिसुः भुं ०:०: सुभुयुथिल्लुव
 हुं गृहल्लभुमः सुभमभुल्लभं सुभु
 रुमदुम विभंवेथरुवदुमिदि
 सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव सुभु
 व कल्लुव सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव
 भयण सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव
 सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव
 सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव सुभुयुथिल्लुव

मिरमिभुयं मरुत्तुनतं मरुत्तु
 तनतं मरुः मरुत्तुमयं मिरुमेक
 धात्रिवाजदभा ३३ भुत्तिकवैसुद्वं
 मयिज्जुं मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 तुभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 यं ३३ मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 दण्ण मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 क्रिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 ति दण्ण मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 द ५ दण्ण मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 दण्ण ३ मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 दण्ण मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु
 मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु मयिभुत्तु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मम भुवि नरोत्तमः
 कुम्भमभिरेहैव नरोत्तमः सु
 भक्त्ययुतः सुयोगमर्हन् यथैव श्री
 गुरुवर्य चक्रिभक्त्याय अरुभ
 क्त्याय सकुम्भक्त्याय भित्तयक्त्याय
 नय भक्त्याय गुरुभक्त्याय सुकुम्भ
 क्त्याय उक्त्याय भक्त्याय न
 क्त्याय सुयुक्त्याय पद्मभक्त्याय भक्त्याय
 उक्त्याय दयक्त्याय सुयुक्त्याय
 य न भक्त्याय सुयुक्त्याय भक्त्याय न
 सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय
 सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय
 सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय सुयुक्त्याय

३०
 ३०

तलविकरणीयसुदृष्ट ३ एवंभा
 उभयमीनं ३ ममभुमिवनेइ
 हिहममपितरुहः सुत्रनरुद्रभ
 धप्रयगीय ककुकेडा तिलमयु दि
 ममीर मयु तिले उरुदउरुभ्रु
 रमः दिमं ३ महे वमनुय ३ क
 वरुमुहनुममगीयं कठउरु द
 उमनुमनुकमयः सुत्रममगीयं
 महे ~~प्रक~~ उडिभुदरिधिदलनेदि
 उकिपनेदिममरुउभ्रुद ३
 इमने दलमिव प्रिविभुदमि
 दल ३ दलयलभुमनुडिउमि
 दलयलभुद मनुडिउयमि द

प्रोप्यं उचिउमि विंठळुं कभर
 नलमएभः देभरुं रुवंवीदं उरु
 चभरुं भरुं कभभुभरुं रुसय
 विहं रुभयं यम यम रुं ममि
 कयभरुं गभरुं यम अं रुभरुं
 यभरुं भलं यगवुं अं भुय
 यं उं उं मि उं रुं ॥ उः मि
 रुं रुं विं रुं रुं यनी रुं रुं
 भरुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं

मि.
 रुं

संभार उडा पविरीकायु ॥ प्रिः पूर्यपतिः संभारु
प्रवेदिः पिउरिः मरु सुमभारः समभनमः पिउरीयम
गहू उदा लेकः मणनमे यस्ते रुवे प्र कलुताभा

यमभारः भि ॥ भंहु एउं प्रथरुमि भंहु ए
मभारमे ॥ यवेरुमः रुवे रुवे रुति रुवे रुए
रणीवारीवे ॥ भंभं रुवे रुव यविउरुमः विम्ल
प्रभामहः ॥ उदां प्रीयव रुमः रुइ उं रम सु सुभउरुम
कलुतां मधि ॥ रुके रुम भग विवउ उं रं सुग
लेके मंभमः ॥ या कय ॥ ग सुतुः मित्रमधि ॥
यसवे ॥ मं ॥ भिउरं मित्रने उं रुइं थिउं भिउ
दिउं यं ॥ मित्रने उं रं सुग सुतु ये ए रणी भवे
मृष्टय ॥ ०० ॥ भए ॥ उउं उउं मभ मिभुं रणी उं सुतु
५३ ५५ ॥ भंभं सुतं रुम सुतु य भुतु सुं थरम
मि ॥ ममिव ॥ रुया प्रय प्रय मय
म ॥ रुउं नियम सुग यथउ ये रु सुतु
४५२ ॥ उदा विथउ ये रं सुग य भुग रुमः

प्रेमभावात्कुलकुलः ममनमस्र कुलसिद्धः पित्रो यमभावात् पित्रो क
 विदुषि उच्यते भूषण नमो भू यस्तु ज्ञायं ज्ञायं भूषण उच्यते भूषण पित्रो लोके कवेधु
 कलुषं भवकलुषं ॥ यमभावाः पित्रो रणीव रणीवते रणीवते व भववभूषणः
 ममन कुलया ममन सिद्धा ममन लोके भववभूषणः उच्यते भूषणः कलु
 पित्रो मित्रं गङ्गां ममन भूषण भववभूषणः उच्यते भूषणः
 मित्रं गङ्गां ममन मित्रं ममन भूषणः उच्यते भूषणः

मुनिभू. ३ मृदु. लंमिहं धिरु
 धितभदं मिरंगे मृदु रंमुंगे.
 धिभूः धिरुधितभदं मिरंगे
 मृदु रंमुंगे ननु उभयं धि
 धितभदधुधितभदः मिरंगे
 मृदु रंमुंगे मिरः धिभूः धि
 धितभदधुधितभदः मिर
 मृदु रंमुंगे मिरः ननु
 उभयं ३ धिरुधितभधुधितभद
 मृदुधुधितभदः मिरंगे मृदु रं
 मृदु मिरमिरः धिभूः धिरु
 धितभदधुधितभदमृदुधुधितभ

[illegible]

चक्रुः समस्तः धिष्णु भावधित्तम
 प्रथित्तमस्तु प्रथित्तमस्तु मित्रे
 शालीकस्तु लीवलवित्तमस्तु लीवल
 भवित्तमस्तु चक्रुः समस्तः धिष्णु भा
 वधित्तमस्तु प्रथित्तमस्तु चक्रुः प्रथित्त
 मस्तुः शालीकस्तु लीवलवित्तमस्तु लीव
 लप्रभवित्तमस्तु चक्रुः समस्तः ७
 त्रुष्टुप्रथं ३ **चक्रुः** चक्रुः
 जलं चक्रुः श्रीगन्तुं भुक्तं चक्रुः
 किमस्तु चक्रुः भुक्तं चक्रुः भुक्तं
 चक्रुः चक्रुः भुक्तं चक्रुः भुक्तं
माधुः धिष्णुः चक्रुः चक्रुः
 किं किं चक्रुः चक्रुः चक्रुः

लभुं कुरुं रसं कुरुं रसं सुरुं य एतद्
 लविण लिता विसे कुरु भद्र भयं
 उम्भ भुक्ति कल भुव भुव भुव भुव
 उत सभा कलेति विद्या उं उमा भुव
 मी कल नमः धिक् भुव भुव सभा
 मित्ति मित्ति कुरु रं सुता मित्ति भुव
 धिक् कुरु कुरु यवै भुव यवै भुव
 कुरु यवै भुव यवै भुव भुव
 कुरु ०:०: मित्ति कुरु भुव मित्ति
 कुरु कुरु कुरु मित्ति भुव कुरु
 कुरु कुरु कुरु मित्ति भुव कुरु
 कुरु कुरु कुरु मित्ति भुव कुरु
 कुरु कुरु कुरु मित्ति भुव कुरु

दि
 ५१-

सारं विधयेषु विलम्बितं यद्वि
 मिद्विद्विदी न न उतं भूयिष्यम
 या कउतुं कउय न सभचमथर
 भेसुर यदु लुयसुके भगी येव
 रेयउतं भय ययं कउि एये क्रय
 दुदुभा ग उदसुर कलमभादीय
 उतिभुतिभुत्वे मिभभूरय विविं भभ
 प्रयउमभमी कउि मिव न भव मित्रये
 गी उरुउ ५१६२ ठियदः सुद
 धम उरुउभा यदु भूय विरमुउ
 विरुयदः सुवभु मभुवमभुभुम
 नभुउरुभर ॥ उरुदलमभय
 यवेयसुभति भुययं व मयति उति

भिइभरुहुयि उकुअभिइउथसु
 म्भभिइभुगभुयि सुत्रभिइउदुकि
 भमिभदि विमुम्लिः सुत्रभिइउउय
 भः भउतिभमः यन्मसुवीपाकुभ
 रिमभुअः पउतिभिइयानेभिइम
 उ म्भयनेचभु यगडीभउतिभुय
 यमकुउभुएणस यमकुउभवाउकु
 उदकुउभुएणस नेणभुतीवेअथ
 उवकुउभुएणस भमउरुभमएण
 नीमउउतियम्वभुउयभुउमउद
 उउंयणनेणभुतीवेणहभेवभुउति
 उयेयिः भुतीवेयेभुभउवकुउति
 म्भुभवा सुभुभिययः पउउभउव

मष्टिनिंयति सुदं अदमुनिभूमिम्
 सुमदं ययदः ॥ पिउतुमुतिग
 यदुं सुनिगवभुनकृद्वीय
 पादुभक्तुसुदं सुनभुनकृद्वीय
 च ॥ पिउतुमुयं भदयभुनकृद्वीय
 वी यभुनकृद्वीय भुनकृद्वीय
 सुयभुनकृद्वीय भुनकृद्वीय
 वदभुनकृद्वीय भुनकृद्वीय
 यउतुमग भिद भिद भिद भिद
 भिद भिद भिद भिद भिद भिद
 यः उवउयि उवउयि भिद भिद
 उः भिद भिद उवउयि भिद भिद
 भिद भिद भिद भिद भिद भिद

मुनिगमनं उविणीव उवेउत्तुथि
 उमदुवेवनें मनेदिउं मुकुमिग
 रुके उदु उव दिभव भवमीत य
 मने धिते मुएण विर भववउं
 मुइ मने भवुधित उं रुकुयणभुः
 यमय मेधनीने धरिम भवमिग
 भदुव उथीयव उकुव कुगभुव
 धीकव धीविकुका उमगधिः वउ
 यथीव उकुव सउं मेभनव मिगय
 व मिने रुएभदु वउ यथीव उकु
 व उकुव यमिउं वमि किन वरद
 व भुवमिग रुवे रु भममभ
 भमभु भममभमभ भमय

मू.
 २.

[illegible]

[illegible]

दमिति भवतीति मरुदं मरुदं कुरु
 नीतिउववद भुक्तु ययं मुक्तं
 हुहुः कभयत नधनक हु मिति
 भिवेकुद भुक्तु भुक्तु मिति
 य किक्तु मवधितु मुक्तु ययने
 उक्तु मवधितु मय उक्तु मुक्तु
 य उक्तु भुक्तु ययं मुक्तु हु
 हुः कभयत क्रय भयति भुक्तु
 उक्तु ययने ययने विदुद भुक्तु
 ययं मुक्तु मति भिदुद मक्रय
 दय केवधितु मवधितु भिदुद
 ययने ययने मवधितु भुक्तु
 मयदिद ययने भिदुद मय

14
 21

दिहयल्लेदधिइलेकउभूठकय
 धुहे मवयनसुथिरयदंमुठहं
 काएउभुनेलेकमिहकउरुभिने
 कुममिहभुतिरिभुवदमुसुवद
 लेहियभमभुहवदभजव
 प्रोदगिभुभुनेकरवलीतिउर
 रकुमउकुमभुतिरिउमिउर
 दुःकभयउयमुभकुमिउउर
 यल्लेकुमउउरिउयकुदभयउय
 मुभकुमिउउरिउयल्लेकुमभुति
 रयभप्रोभभयवएउमुविभ
 गोकुमभप्रोभभयवेवउमुहद
 भिनेलेकयभभवेवभीयकुवति

[illegible]

तिष्ठता भुम्भुः सुदृढं हृत्पुच्छकाम्भु
 भुम्भुयते धिक्कृतं भुम्भुयते यवम
 भुम्भुयते भुम्भुयते भुम्भुयते दिक्कृतं
 वृद्धं भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते यवम
 दिक्कृतं भुम्भुयते दिक्कृतं यवम
 उन्मत्तं भुम्भुयते उन्मत्तं यवम
 य वीर्यं भुम्भुयते य वीर्यं भुम्भुयते
 दिक्कृतं भुम्भुयते दिक्कृतं यवम

तिष्ठता भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते
 भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते
 भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते
 भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते
 भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते वृद्धं भुम्भुयते

भैभयंते रंमन्नु भवः भवेभीताय
 उयगभवाय भलन्ना यदमः रु
 किल्लमन्ना यली युताय मन्ना यदमः
 यमिग मन्ना युताय मन्ना यदमः
 मः उतरे रंदिनी युताय मन्ना यदमः
 मः सुयउन्ना यली हं नमः यमने चउ
 हं नमः यममन्ना हं नमः यममन्ना
 हं नमः मन्ना कलि कय मन्ना
 नमन्ना य हं नमः युताय मन्ना यदमः
 मन्ना यगन्ना कन्ना मन्ना यदमः
 यगन्ना मन्ना मन्ना यदमः ॥ १० नैव भन्ना मन्ना
 भन्ना विभन्ना मन्ना यदमः

उज्ज्वल विष्णु परमेश्वर भद्र पशुवि भद्रयः विवि ३५
कर्मका ज्ञा वरमपन्न ज्ञा वमल्लु भद्र कष्ट भद्र सुदि
सु उड उज्ज विष्णु भविज्ज लक्ष्मणः भविज्ज विष्णु
मा ३३

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

यवै मयय मिमद नरुउरद सुए
 नरुउर मयुउः थिउः विममममभर
 नैकभूक मरुहूँ भवमोउः श्रीपं
 भउं थरि कन्यय मिउमः **मवि**
 कनरुउर मयय मयय यिनी युउं सुउं
 मयय मयय श्रीपं थुउं नैक दिउय
 म मयय मिमद नरुउरद सुए
 नरुउर मयुः थिउः मयय यिनी
यमि कनरुउर मयय श्रीपं थिउः
 मयय मयय थुउं नैक मयय थुउं
 दिउय यवै मययः मयुः थिउः सु
 ययुउः **उउ** कनरुउर मयय श्रीपं
 मयय यिनी युउं मयय मयय थुउं
 नैक दिउय यवै मययः मयुः थिउः

केवभादयैद्विष्टु निष्ठुदंथिदक
 ध्वि सुवदयामि विष्टु मित्रधामपी
 ० मीरा भवमंयुवतं कुमसी यदुपं भीर
 युतं भकलल कउतं वरं धंयगु कउ
 समउय भक मउयं सुवदयामुदं
 वरं भवमंभीतया युतं भक मउयं
 कुं कउयं कउयं कुं कउयं कुं कउयं
 कुं कउयं भकितं विष्टुं यरं कउयं
 कुं कउयं भकितं विष्टुं यरं कउयं
 सुवदयामि विष्टु मित्रधामपी ० कुं
 भयं यरं विष्टु मित्रधामपी ० कुं
 युतं कुं यरं मित्रधामपी ० कुं
 यरं भक मउयं सुवदयामुदं
 विष्टुं यरं भक मउयं सुवदयामुदं

कं मुक्तवले • **प**सिने सुवदयामि
 भुवि विउथामयुषं उल्लेखिणि मम
 उक्तिरले मयी उं सुयामुतं भवराय
 नमभवेन भुं धीरा नू • उ • सुयामुतं
 मितादुतं मे दत्तक मम नं थलिके भ
 कसमं गजवले **उ**उर सुवदयामि
 भुवि विउथामयुषं उल्लेखिणि मम
 उक्तकला विधानं मूर्तिदिनी युत
 नमभवेन भुं धीरा नू • मुक्तवले •
उउर सुवदयामि विरुसमिउथाम
 युषं उं कुण्डलियन उं भुलिके नम
 वक्तिमविमुण्णयथय भुभमनं उं धीरा
 नू • सुवदयामि वरु विमृणी की
 यमल्लुके न नमरे किमं युक्तं भव

कवचमभुते परलिकणउभुहृष्ट
 भुभक्तिरुयिदे **वैरुते** सुवदयमि
 भक्तिभुमिउयमयींमभुमभु
 एउउउदरलभुहृष्ट **वैरु** यियेमर
 मलीयएउकलयेपेरनु. सुवद
 यभिलिकेमेयभनेउडिभहृके
 यभदियमभयुजेहीपडुयेभदेर
 भिपरलिक. **वैरु** सुवदयमि
 वरुलवरुल यियेउमुविरुलभुउ
 उभभरुगयिउरु वयुंमभयणउ
 यविभुविउउयंयेरनु. सुवदय
 भिलिकेमेयययेहीयभहृके
 एलभुल यियेभनेयमभभउम
 हृके परलिक. **वैरु** सुवदयमि

एतमं प्रभुमसमस्तं सुखं भवेत्तिष्ठिथ
 त्रिपुरं कुरु कुरु कुरु श्रीमद्भक्तविरक्त
 मन्त्रं तव तं ध्येयं त्वं सुखं दयामभिम
 वसे प्रष्टु एतन्मम कुरु श्रीपदुपयोगे
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 वदयामभिरक्तं मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 वदयामभिरक्तं मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 सुखं भक्तलभतु दिगन्तमभ्युपगच्छ
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 सुखं भक्तलभतु दिगन्तमभ्युपगच्छ
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं
 सुखं भक्तलभतु दिगन्तमभ्युपगच्छ
 मन्त्रं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं त्वं ध्येयं

यभीरमंयुक्तं गुरुमुंभुतभक्तये ॥॥
 उभयत्रिककुलमंयुक्तं पुनःवत्तु
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 एतदंयुक्तं पुनःवत्तु उभयत्रिविधंयुक्तं
 पुनःवत्तु उभयत्रिविधंयुक्तं कनम
 कीयवत्तु उभयत्रिविधंयुक्तं
 मदितायुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं
 उभयत्रिविधंयुक्तं उभयत्रिविधंयुक्तं

व० भूपि उंमभिरव० रुक्मि संवभस्वव०
 उउर लेभेहिएउवडा यउम ययुम
 भवउउरु० इभिमि० मना पिउमि
 मिमि० भुउउरु० मलभमऊयउ० म
 नउमऊयउम० **रवउउरुभः** मिम
 उउयउमः अयि भम० मिमउ० वरु० गं
 म० रुक्मि विभुउ० रुक्मि भयउ० रु
 रु० कलउ० रुक्मि विभुउ० रुक्मि भु
 रु० रुक्मिः भुमभउ० यमयेः रुक्मि
 रुमि० भःमि० मिम० वरु० यम०
 रुक्मि० मभिमि० कथामि० लिमि
 रु० भुम० रुक्मि० मभिमि० रुक्मि
 अयि रुक्मि० रुक्मि मभिमि० रुक्मि
 रुक्मि० रुक्मि रुक्मि० रुक्मि कथ

लमठै. पुह लीयल्लै. एतः. मंदर
 कै. धर्मोः **विभिभ्रुद्धेष्टुप्रए** महु
 उवज्ज कगवतेमिवयमथविवरय
 कवयमवय उ वृद्धीमदिउयुभि
 उद्धैवय भादोसुगीम. मरुहै.
 कैभगीम. मरुहै. वृद्धीम. मरुहै.
 वृद्धीम. उद्धै. लीयल्लै. कथ
 कमठै. मरुहै. लीयल्लै. मरुहै.
 लीयल्लै. मंदरकै. सुधेगीसुगीम.
 मरुहै. सुधेगीसुगीम. उ सुधेगी
 उं थिउहैवगीउयमरुहै मरुहै
 सुधेगीसुगीम. सुधेगीसुगीम.
 मरुहै उतः मरुहै. उतः मरुहै.
 मरुहै **मरुहै** लीयल्लै. मरुहै.

सथा० त्रिंक्षी भूमभुक्तु र सथा० त्रिंक्षी
 उमडुग र सथा० त्रिंक्षी उडु नकक र स
 था० त्रिंक्षी उडु भुडु कगिडु र सथा० त्रिं
 क्षी त्रिभुडु र सथा० त्रिंक्षी कुरु भुडु र सथा०
 त्रिंक्षी गडु र सथा० त्रिंक्षी गडु र स
 था० त्रिंक्षी त्रिडु र सथा० त्रिंक्षी कुरु
 र सथा० त्रिंक्षी यगभभुडु र सथा० त्रिं
 क्षी यगभभुडु र सथा० त्रिंक्षी यगभभ
 र सथा० त्रिंक्षी सुगिभभुडु र सथा०
 त्रिंक्षी त्रिगभभुडु र सथा० त्रिंक्षी
 कुरुभभुडु र सथा० त्रिंक्षी भः भुडु र सथा०
 भुडु र सथा० त्रिंक्षी भः भुडु र सथा०
 भुडु र सथा० त्रिंक्षी भः भुडु र सथा०
 भुडु र सथा० त्रिंक्षी भः भुडु र सथा०
 भुडु र सथा० त्रिंक्षी भः भुडु र सथा०

282

[illegible]

रमः भुक्तुदये वरुभुये यग
 कुरये दिवदये कुरकवभुये य
 कुरये मरुयमये लिके मभुयये
 भवामिनीययभुय कम्मरीठय
 यामुरि तिह्रीमंगुयेरमः भवामि
 ॐ श्रीकुरये ॐ कुरगुये ॐ धर्मदकु
 कुरये ॐ लिकुगमिनि ॐ निरुदुरये
 ॐ भुमीभवदुरये ॐ कभदुरलये
 कलमदुरम तिह्रीमंगलदुरयी
 यरमः भवामि ॐ श्रीउदुरयिदीयी
 ॐ कुरलुरयी ॐ यकुरभीमुरीयी
 ॐ लिकुलिदुरयी ॐ निरुदीकुर
 यी ॐ भुमेलयी ॐ कम्मरीयी ॐ
 दिवदुरयी ॐ श्रीधमदुर तिह्रीमंगु

मी.

भुक्तकृत्य गवलय एकदशय मि
 तयकिने कलनेभय कलनयय सि
 कुंकीमीरुदीमदियदुभितान्क
 उवययभः **सुप** एकवर्गमउठ
 कंकटायदुदुधुधुधुधुधुधुधुधुधु
 कंकटुंरुवीभुतिथगयलं गुरुमि
 ब्रह्मकर्मकर्मवभूमिभंभुतंरु
 ययभः कीमलय सिंदकलय
 एगदियय भुक्तयय वामयय
 वक्तलय एयययय सिंकीकी
 यंकींरंभादीगुगीमदितयय
 कंकटययभः **रुक्ति** एकवर्ग
 मउठकंकटायदुदुधुधुधुधुधुधुधु

[illegible]

सुं रे वं प्रकी मदि कायं रे गैर वय
 नमः **यसि** मउ उं मउ वं क
 मय ड म मयं मुले ड उ क र ड उं
 मउ उ डि थ र य ल ड रि ड ल ड डि
 मं ग य म म उ क र वं म ग थ ल य
 नमः मय म म म व क र व य ड ड
 उ य म डि ड म ड य क र व थ य य
 मं मं हं रे व र दी मदि का य उ म उ
 क र य नमः **वय** मउ ड रं म क
 मयं क ड य ड ड मयं मुले ड उ क
 रं म व मउ उ डि थ र मं म उ ड
 ड डि थ रं क थ ल थ क भी रि उं क
 ल य नमः क ल म ड य क ल म य

महाराष्ट्राय सुमित्राय महारुभय ॐ
 मय सुदल विहंगो दं रं तकीम
 दिताय कथन्त सहराय नमः

उत्तर मत्तकुरं मेक भयं कृत्वा यदु
 द्दुधयं सुलेष्टुत्तुं भे भुंजितुति
 थग्यान् थग्यान् मन्त्रि ध्यान् नीध
 म्भूककुरं दृष्टि रूमः थग्या
 य कलकुय दृष्ट कुर्य नभयय उ
 सुभय वदुधय थग्या यदु
 दृष्टु दृष्टुं मन्त्रि मन्त्रि यदीय
 मन्त्रि यदीय नमः **उत्तर** मन्त्रि यदीय
 उत्तरं कृत्वा यदु द्दुधयं सुलेष्टु
 कुरं मेक मन्त्रि यदीय उत्तरं

शिलेसद पीडसका मभइसराभे
 कएथिठिके केभगीभउविहय
 भवठर... कुयित ऊडसकये वि
 मल... केकगये वरुवभले द
 दगवये कदउकुये रियभलये
 दयउरये लेंकेके सुंकेकेसरु
 भुकुमेवडभदितये केभदेउभः
 केभगीभु नरुमि. **नरु** मउकुए
 मउयइउरुभुमहिलेसद सीलन
 मवरकगवभकभुकयकडभवा
 ठर... भयुऊवभुवीभभुठभु
 भवहये विहउये उगये हकेपये
 सुगउरये भभभये रमभह
 मभुदे विभं. एंभंउं भवहउभुके

मिवत्तमदितायै वसुधैव कुटुम्बकम् नमः वेधुवी
 भुः गनुमिः पश्चिम मउकुएवदइ
 कुंडमं वगदकं भायं ललायभुदि
 कुडमं गिगणभुकाभउ एयमूक
 भइविहृती वभायै टकभभुक भय
 कलमेकलुवगदी भवकभम
 नललएयै गजाकु विहृएकयै
 कुरकिहै मयदमयै भुमभयै उ
 गूयै लभुकहै सुंरंयं रंवललए
 एहभुकमेवत्तमदितायै वगदइ नमः
 वगदीभुः गनुमिः वयहै मउकु
 लकवदमगणभुमइलिमव
 यीतवदगगयभुवमठयकभभु

लः उक्तं नीम उ विष्णु या प्रलितम्
 उमभुलं मन्त्रये उमः मन्त्रावत् भू
 पादुयै भूलया तिकुयै पिसुवत्तु यै
 धिसाहू धिमितायै वुलिलहयै तं
 मैतंमं रं मन्त्रा हृषु रत्नता मदितायै
 तंमृ उमः तंमृ भुः ननु रि० ३३३

मउरु रं कवमउ नृभु मन्त्रा तिले मन्त्र
 रत्नयेता मय मृभु कथल वमम
 मन्त्रा मय मृभु मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
 मृभु मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
 पितुता मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
 विरभायै विमृदु धि तं तं तं तं
 तं मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
 मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

नी

गंगे गङ्गा नदी कनक नदी हनुमन्
 भूमि विहारी कनक नदी भूमि
 दुर्लभ नदी कनक नदी भूमि
 यमुना नदी कनक नदी भूमि
 मगध नदी कनक नदी भूमि
 विहारी नदी कनक नदी भूमि
 दण्ड नदी कनक नदी भूमि
 धनुष नदी कनक नदी भूमि
 भाद्रपद नदी कनक नदी भूमि
 मल्ल नदी कनक नदी भूमि
 विहारी नदी कनक नदी भूमि
 हनुमन् नदी कनक नदी भूमि
 मगध नदी कनक नदी भूमि
 धनुष नदी कनक नदी भूमि

[illegible]

विनतं विकीरुहमथमंगदुः
 यममभितो मज्जि ममरुडि
 मरुभक्त विदुयतं मिनभुजं
 दंभेभं भूहलीहयमभुजं
 मुभक्तगं मलीहयमभुजं
 डिनी गतिकं मेयविभुं मभक्त
 यत्रिभक्तिः मभक्तमभक्त
 यीरेउउथंयमं विधरीउउभुं
 मयकुडिभंउरुवं वलिनीहकि
 सीयुजं वमभक्तियेनउः
 मयहं यतीहं हं हं हं हं
 मिव भूहलीहयमं मिहं भुक्तमे
 मिनभुजं मभक्तमभक्तमभक्त

मी

ॐ ००

शुभाङ्गल विष्णुयुक्तं सुदिनीरुभय
मुत्तकुरुभद नलेयभं विष्णुल्लह
हिनयनं सुतयौदिकुचलु किंती मे
कुरलचरुनं पीनित्रउपययनं भद
म्वीभद यं भुक्तुमीमिभुं
ललिदाभुभदलिहं भभभल
विष्णुयुक्तं कुराभुत्तकथल्लहलीय
ल सुदिनीयल सुकुं विष्णुभय
रं सुयसुं विमज्जल उतिपुद
किंतीमीं कीभुसक गभिकुयेठल
भुद सुयसुयकुरययभुद
उभुयययमिभुभुद उं वदुय
मिाययविभल उं यययकुरवग

303
 धर्मसुखं कर्मभूम्या उद्विग्नव
 निभयं यत्तन्महत्तमं विदुः श्रुतं
 भानं मष्टममभनं कृतं सुभतं
 सुभतं भिवं शुभं यत्त्रिंशत्पि
 त्रं कृतं यत्तं यत्तं विमिषु उद्वि
 यमकं यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं
 भान्तिममं भूयं यत्तं यत्तं
 उभयं लभं भूयं यत्तं यत्तं
 भान्तिममं भूयं यत्तं यत्तं
 सुभतं यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं
 यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं
 भूयं भूयं भूयं भूयं भूयं
 यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं यत्तं

विष्णुभक्तसमूहस्यः तद्वत्प्रभु
 तिस्रस्तं मि भुम्भुत्तुयभू... भुति
 भूम्भुत्तुयभू... भूमीति सीदी
 लकं भुम्भुत्तुयभू... विदियेनः
 तिस्रस्तं मिभुभू... उदभू...
 तिस्रस्तं मिभुभू... उदभू...
 तिस्रस्तं यंलं मिभुभू...
 तिस्रस्तं यंलं मिभू...
 भू... उदभू... भू...
 भू... उदभू... भू...
 तिस्रस्तं मिभू...
 तिस्रस्तं मिभू...
 भू... उदभू... भू...

तहं मित् पुय सु. भद्र व धरु दहं
 नद्र पगं हिरे सु म मर हं मित् पुय
 सुय दय भुद सुत क त्रि म्वं भद्र सु
 उ हिरे सु भुत क क हं म मर हं मि
 व पुय सु. भद्र म्वे हिरे म्वे सु
 गण विद्रु म्वं म मर हं मित् पुय
 सुय दय भुद सु हं म म्वे सुत म्वे
 उ हिरे सु म हि सु ल हं म मर हं म
 नद्र सु. भद्र म्वे मित् पुय हिरे
 म म्वे सु म म्वे म मर हं मित् पुय
 सु. सुद्र प सुय त्रि भुद विद्रु त्रि
 म्वे सु म मर हं विद्रु म्वं सु. उ
 ह लि ग ल्लि च उ सुय ल म्वे सु

मदिउठैगवां उवदरेयपकुषक
 प्रवे सु. सुमिडादेसउकुए सुल
 कययगंभे सुंथिउले मुक्तिउवे सु.
 इंदीभवमभुहिमं दंभभंम
 उवइं प्रणिउ विअरुमिलि सु
 प्र सु. उववंममभलिउं भिनुग
 मिमभुवं एकुवइं हिलेमं सु. भा
 दीमीवधवदं भद सुगचरुदभु
 यल्लवइं हिलेमं मत्रिल सु. म
 कं भचमभुहिमं सुभवलं सुते
 सुंयठइमिविअधउं सु. कंभंमी
 मिथिवददः यमयेपकुए भं
 वइं सुंरुदमेठिउं रूउ सु. रूवं

पांसे सुकुं यक न्युत सुकुं पुनर सुभा
 सुं सुं भे भयनमः एते वा नु र भय सु
 जीनमः कीरं इनी भ विर य न्य क रु नि
 जिक वि र भ वि न्य ले भ य प ड ये भ ड न ल
 य न मः ३५ उ ड र्हे थि ड र्हे र भः ३६ लं
 थ वि ड र्हे थि र ड म क य र भः ३७ उ ड
 ल र्हे थु य न मः ३८ य व र र र र र र थि
 ड ल य भ ड य र भु क म भ ड र र वि थ
 र भु थि थ ड क ग ड र र र भु य र र र
 य व जी थ र भ सु र उ भ ड य र र र र र
 थ र भ न र ल र र र र र र र र र र र
 र र र र र र र र र र र र र र र र
 र र र र र र र र र र र र र र र र
 र र र र र र र र र र र र र र र र

गुरुभ्यो नमः दिगम्बरं चतुर्भुजं
 मङ्गलमस्तु भविष्यः परमेश्वरभ्यः ॥
 ॐ नमः ॥ प्रमदभ्युदयं भिक्षुभ्यः भ
 र्गवभ्यः इन्द्रभ्यः गङ्गा भद्रकालः
 कुरुभ्यः गङ्गाभ्यः इन्द्रः विष्णुभ्यः
 प्रमदः अक्षयः भिक्षुभ्यः एकदशः
 एकदशः इन्द्रभ्यः श्रीकृष्णः भिक्षु
 भ्यः इन्द्रभ्यः गङ्गाभ्यः कुरुभ्यः
 कुरुभ्यः अक्षयः मङ्गलभ्यः इन्द्रः
 भिक्षुभ्यः यमः विष्णुभ्यः वरुणः वरुणः
 कुरुभ्यः गङ्गाभ्यः इन्द्रः विष्णुभ्यः प्रमद
 भ्यः यमः विष्णुभ्यः अक्षयः कुरुभ्यः
 यमभ्यः इन्द्रभ्यः मङ्गलभ्यः कुरुभ्यः

[illegible]

धृत्तुत्तयाभाङ्गनायादिरायाङ्ग
 यः सुमिष्टाङ्गः शुद्धस्यमङ्गः भङ्ग
 मयस्यै वङ्गमीतिभुषाभुषाङ्ग
 धृत्तुमिवभविष्ये चक्षुषभुषाङ्ग
 मङ्गङ्गाङ्गमङ्गमङ्गय मङ्गयैकीम
 पूङ्गः उषाङ्गमङ्गङ्गयः यमङ्ग
 वक्षिषाङ्गिङ्ग मङ्गधृत्तुमङ्गयै
 निदिङ्गङ्गङ्गमङ्गयैनिङ्गङ्ग
 धाङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्ग
 नङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्ग
 मङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्ग
 यङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्ग
 उषाङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्गङ्ग

[illegible]

मुभइ त्रिकैयः भइ भवः ५
 मः ५ः लिकैलिकै मे भइ कः मः ५
 मयः शिहल म्मी भइ उये उइ ॥ मे
 मयः मे मयः यम म्मी भइ भइ थिः
 उथिइ वि कः भचै उइ ॥ दि भ म्मी
 यम म्मी कल म्मी मि वल यः
 वि भ म्मी मयः भचै उइ ॥ य म्मी थवः
 भि म्मी यम म्मी भइ उइ व भिः ॥ म्मी
 म्मी भइ म्मी भइ ॥ य म्मी भइ म्मी
 म्मी भइ म्मी भइ ॥ म्मी भइ म्मी भइ
 म्मी भइ म्मी भइ ॥ य म्मी भइ म्मी भइ
 म्मी भइ म्मी भइ ॥ म्मी भइ म्मी भइ
 म्मी भइ म्मी भइ ॥ म्मी भइ म्मी भइ

वउउ. रणरुयेमममुलभुमील
 येमभंभुउ येमकमपरिकुभु क
 उममभुउमये वरुवमउमल
 उरिभुभिकउवमिरः यउकुव
 मनेयेमउउ. येउमीउभरिभुम
 येवविरयनभिरः येवमभुम
 मिरउउ. मिरकमविरिउम
 कुवभेरिभुउमये वरुवमभुम
 मवउउ. यभउमभउरलुयेभ
 उभयिवउउः येककुयेमरलु
 येउउ. रियमयभुउमभुउमभु
 मयेभिरः येमभुवमिवलुनभ
 भनरुमयमये मयेमभयमभवे
 उउभुभमभुमभु ३० यवीउ कवीध

य कचुमुमदय भदय गणम उ
 ममे सुकउदय **सत्रलपदं** परभा
 दमभा कचुमदय क मरुतु धिये सु
 वल पदममिउं नुद... गिरिमपद
पदं कचुमदय मयल्लु वरमठ
 यमयक वमं नुद... मरुममिउ
 वधियमेठिउं **उधवीउं** यधुमजि
 इयीनं मं नुतमभियलं नग
 यल्लु भुइ यउं नुमयल्लु भुइ भु
 नुयोजी **नरं** परभा दमभा कचुमदय
 प्रल मिनतु नुद... यमं नुत
 ययं परभा सुन **ययं** उगीय वरमं
 नुतं नुदं नुदं नुदं नुदं नुदं

न...पठये चधठाय कुभागाय च
 भिकृष्य मङ्गीमृगाय **वाडीय** उम्
 यवडा दधुययमः ०० **मड्ड** ए
 ययै विराययै भुठायै मृग
 यै एययै मुदिष्टे सुयगणिङ्क
 यै कृगलै वडै **पाङ्गिभ** अदययमः
 ०० **पङ्गुयै** पङ्गुङ्गणाय वामु
 कि उम्क यम्भदं यम्भ कृष्टे
 मल्लपाल कुलिक **मड्ड** वडाय
 दण्डमः मङ्गीय मङ्गीय यम्भय
 यम्भय पुरय गणाय हिमुकय
 यम्भय मङ्गीय ॥ मिराय ठवय
 मङ्गीय मङ्गीय उणय भङ्गीय
 मङ्गीय मङ्गीय यम्भय वडुभय

मित्राय भयति वारय मंडुदमः ५
 यंदमः **प्रयं** वरयति मंडुदमः ५
 हिनरु मंडुमः सुगयः भवम्वरं
 प्रययं भुतिगुहं **गुह्यं** भुतिगुहं
 मेभुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 राह्यगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 उं **गुह्यं** गुरादीदं भुतिगुहं
 उं दमम्वरं भुतिगुहं भुतिगुहं
 राह्य **कं** दमम्वरं भुतिगुहं
 भुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 भुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 भुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 भुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं
 भुतिगुहं भुतिगुहं भुतिगुहं

मप्रपके मयकलमदीदयपयिप्र
 लप्रपके मप्रपकेमिमंरवकल
 यामिप्रमीममे उप्रभाहलिः द
 विमंयिलयप्रदिगकप्रदिगम
 मप्रपकेहलिमिमंममुप्रदम
 मप्रमुमे प्रप्रमि यप्रदिगदिम
 यप्रमि एप्रप्रप्रप्रप्रदिमप्रमि
 उप्रप्रमुप्रिमिप्रप्रप्रप्रप्रमि
 प्रप्रम मप्रदीदयमेमयप्रप्रप्र
 उप्रकेमः मप्रमुप्रिप्रप्रमेमप्रप्र
 प्रप्रप्रमेमुप्र ॥ प्रप्रप्रप्रप्रप्रप्र
 नं प्रप्रप्रप्रप्रप्रप्र प्रीप्रप्रप्रप्र
 प्रप्रप्रमेमुप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्र
 मिप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्रप्र

श्री० **व्यास** भट्टे नमो भुवः सिद्धे कथा
 नमो नमः० शुक्रभ० नमो भुवः० उं नमः
 नमः० सिद्धी श्री सिद्धे नमः० सिद्धे नमः०
 शुक्रभट्टे नमो भुवः० सिद्धे नमः०
 यमभट्टे नमः० शुक्रभट्टे नमः० सिद्धे नमः०
 भट्टे नमो भुवः० सिद्धे नमः०
 भ० शुक्रभट्टे नमः० उं नमः०
 सिद्धी श्री सिद्धे नमः० सिद्धे नमः०
 शुक्रभट्टे नमो भुवः० सिद्धे नमः०
 यमभट्टे नमः० शुक्रभट्टे नमः०
 श्री० **व्यास** भट्टे नमो भुवः० सिद्धे नमः०
 नमः० शुक्रभट्टे नमः० सिद्धे नमः०
 भट्टे नमो भुवः० सिद्धे नमः०
 नमः० सिद्धी श्री सिद्धे नमः० सिद्धे नमः०

मन्त्रं गुरु भोता युते मम मन्त्रं लुप्त
 लुप्त युते मम मन्त्रं लुप्त युते मम मन्त्रं लुप्त
 यन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 कालं दिक् प्रीय भवेत्तु यन्त्रं लुप्त
 मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त
 लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त मन्त्रं लुप्त

पञ्चक० धिउः विष्णुः कंगवनेरमुक
 मुसकजीयसुं सदकगिमु भयं
 मरुवडा वभेवमः उभ्रकमकुयव
 मः रेंडकुम० कुं रियम० हिल्लर
 म० वृद्धु मगीहृ भभृयै इल्लिरे
 कंगवै प्रभृयै इधिरु कंगवै उपम
 कुं थगिरु ददवदयै इरं वडै मरु
 मभयै प्रभृयै थम० कंगवै मरु
 विमृत्रयै उभेयदयै धिरु क वभं
 उभेयिरे मरुम० प्रभृयै मरुम०
 प्रभृयै कंगवै थम० मरीं थम०
 धिरु वि० क० मरुं प्रभृयै मरुमः थमि
 कंगवै मरुमः विमृत्रयै मरुमः विमृत्रयै मरुमः

५

थिरे करवनिडा यमकुण्ड मभउभं
 भुगवमः सुद... सुद... सुद...
 मरुभदिउभययउ थिरे करवनिडा
 यमकुण्ड यमकुण्ड मभउभं
 थउभययमिभुगवमः विभय
 उउउमकुथिभउमं यउउ कुम
 उययउ उउययमभउभुदभुद
 उभउउययसिकमवउउउउउ
 यय उउउययउ महुमिरे मभ
 वी सुभुभउ... थिरे विभु कर सुभे
 मभउभं भुगव मभउभं मभउभं
 मभुगविवउउ विभु कर मभ
 सुगमुदः विभु थिरे मभु य

गुरुवाय वद्विभङ्गलाय भद्राय न
 रामे उममे सकृद्वद्वय उक्तुत-
 भक्तुत- मत्तुल्ययम्भ- भद्रभुम्भ
 लयम्भ- वामायै ह्युपुयै गुरु
 पादभये कल्लैभुयै नमः उक्तुम
 प्रत्यु मः मः मन्त्राय मन्त्राय न
 गुरु मन्त्रभुम्भ मन्त्रिलभुम्भ
 ति मिष्टवद्वमन्त्रः मन्त्रिभुम्भ
 यमन्त्रु- उक्तुं ह्यैमन्त्रिभुम्भ
 निविभुम्भ कुरुवद्विभुम्भ
 मिष्टिभुम्भ कुरुवद्विभुम्भ
 प्रत्यु प्रत्यु यमन्त्रु ति विद्वयै नमः
 कुरु विद्वयै नमः

महुडा. लेमिहं धिउः ठेव. मऊ
 उकु मजिगठ मऊ संधिउ भुगउ
 मः मयउ महु ० मयिभु. यभा
 उकु. लेकुंही मडि कथा लिनि
 भु. द. कुं ठेव विरु कुल वं मेधि
 मि. महु एउ ठेव वरु मभयं धा
 यथय यथं ठे विरि लयं धिउः
 ठे. धिउ भु. मया मि भुगउ मः
 महुडा. लेमिहं धिउः लर मजिः
 गठ मऊ संधिउ भुगउ मः ३
 मयिभु. यभा उकु. लेकुंही म
 डि कथा लिनि भु. द. कुं ठेव वि
 रु कुल वं मेधिमि महु एउ ठेव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तिष्ठं भेदवृत्तं पालकं भवे भवे
 सुहृत्तय विमुक्तः ॥ यत्तु
 वारिक एतद्दृष्टं पृथक् दृष्टं
 गमिदिग्यमपुनः सुयथि यत्तु
 यत्तु यत्तुः भवे भवे भवे भवे
 यः पिल एतद्दृष्टं सुयथि यत्तु
 येनीक्रिड वत्तुमीक्रिड वत्तु
 सुमत्तु सुयथि यत्तु भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे
 यत्तु यत्तु भवे भवे भवे भवे

१ जेगनु कण समल यथर इमिह
 निकपकस एर रयमिमे उ दे सि
 कीयजमभु विठवण भमिक कडि
 श्रीवभुजवठनपाह मउ निरनु
 उ कवउ भउ उ कीय नु क मे र भउः
 भनः भकमडुंय विमुडु पीयउं
 भभमडुः ७ ॥ उउ कलम विभ
 उ प्रचरउ ॥ उउ मि व भु डि भयं
 कभा भयं ॥ उयं विभ कर मर ॥
 येमी किउ व उ मी किउ व मे
 व म म उ सु पि व भु व व भेदनु
 कय थर न क मि डुं मुउ उ य म य ए
 ग सु उ उ व न मी कल मी सु भि म

कः भन्दीमी भदिउज्जं कः उभ
 भभचर दिभसेल रिठ म्दी भद
 चय कव दन मउदुर मउव कः दि
 नइ यथ द रि न हिमुल दभवर
 म्द द क म्द धिउः मिच क म्भ
 दवी द भन्दी य रि द म्द क म्भ
 म्भ केल निरे ग्जं क म्भगी भदि
 उमुष कः उ कः वे ग्जं म्भ क म्भ
 भिदये म्भर द क म्दी भिदु ग्
 म्भ विदुः म्भिद म्भ म्भ उ य
 म्भ ल क म्भे रिउः म्भ क म्भ म्भ वी
 द म्भ म्भ उः म्भः क म्भगी वर
 म्भ वी म्भ रि म्भ म्भ म्भ म्भ
 व म्भगी भदिउ न य क्क उ ग्ग यी०

ॐ कुरु कुरु मम हिमावत नयकु
 हवत दभु मद वल नयत कंभ
 दभु कुरु कुरु कुरु मया भिदु गव
 वद भिदु मचल कुरु कुरु धिदुः हिन्दी
 मनीमम कुरु म उभय सु कुरु म
 उउउ उमु उमु उमु यी उ ममु मभिदु
 मय सीध कुरु वेग कुरु उभमम
 यम कुरु कुरु मुरु म उभय म
 मय उमु कुरु कुरु वद मय मय
 मभिदु कुरु कुरु कुरु म लिदी कुरु
 ममु लय हि मय हिन्दी मुमु धिदु
 उयत नय मय वदु हि कुरु मय
 मल कुरु मनी मुमु मुमु निव भिदी

मित्रकुय... मित्रगवचयक
 गी मभु... मभु... मभु... मभु...
 गेउम **मभु** मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...
 मभु... मभु... मभु... मभु...

कवणइभुभुभु यल्लेकभु. भि
 गवकगलिदा. यल्लेतिभु. उभ
 भभिडा. कवकलमभदिउरदी
 दीयेभुतिथमयाभभुयाउमः ७
 उउरुदभभुये प्रचवकुडा. सिद्धे
 वेमिकडा. उिकेडिल्लेकभु उउगग
 भभिडा. विभुभुये इयीभभुति
 कलमसिद्धे कभभुये कभउम
 इधल्लेव. उरुभभिदिभुमयके
 उरुलकुगभयुडा. गसुडंभु
 देभुतिः सुडा. उरु. उरुकलम
 इभभनं कभुभुभु कभुभिडा. उभ
 भकुलु उरुउम. उडिदीभभभ

[illegible]

[illegible]

इविमुदउव मरुभाभभुदुपाय
 मरुभाभभुदुपाय यिभयभमा
 मरुगीएभुदुपायमभुदु रमःमंते
 गुभिराभिमभुदुपायभुदु रव
 उभभुदुपायभुदुपायभुदुपाय
 री रमःभमभुदुपायभुदुपाय
 यंठनिरीभुदुपायभुदुपाय
 यभ्ररिभुदुपायभुदुपाय
 मभुदुपायभुदुपायभुदुपाय
 कविभुदुपायभुदुपायभुदुपाय
 यभुदुपायभुदुपायभुदुपाय
 यभुदुपायभुदुपायभुदुपाय
 कविभुदुपायभुदुपायभुदुपाय

370

[illegible]

कृपयथरभभुतल किने रुढेदि
 मभवेसठरिउपिलभपुये रुमः
 मक्तिमरीगयकेदि डिउयभभिन म
 दामेदभलभुतुएनीववनववेदि
 नी भदसुगयएगडंरुमेकएर
 नुच भुनेमुलनमकेकभुतयविमु
 भुतये नमभुभुभदभवेरुमभुभु
 एउउरुभुभिनभदवीरुमरुवमवि
 रुमिनी रुमयरुविउमयनरुय
 रुमेभुत रुवदुगभभुममचलिदु
 उमक्रये रुमभुमसप्रष्टयभवक
 रुलरुउच रुपडीउरुभभुहं रुमभु
 रुकुरुयिल रुभुलुयडिगभउग

लुकाभरं उद्वंभुदराणमंभदाठ
 रठाभतं येनिरीतंथंभुनंउमडा
 दुभृकभुमिडा सुमीमिउमठकुरेवि
 भुहसुमिवलिउे दभिकुमयलिभ
 त्वभभतंविभुउणभ पुमसभुभा
 मगदुधककलदभिय विरुकेसुभु
 कगुहभभयहभमभुके ममि
 हउदिउथययमदीउमनचिउठ
 क्रियउभुमउहंनेमदंभचमकमिडा
 सुभुवभुतिभउभुविप्रनसुतिउक
 मः उरुकराउयउमवउल्लग
 भाग्यः सुकिरमभिममगक
 रभडाभयनकः हपिउकिउमठ

शुभांगीभेद विमलः ॥ १ ॥ शुभा
 मयेष्टं यल्लयं भिमेष्टम भवेष्ट
 शुभा सुतिमस्तु शुभा शुभा शुभा ॥
 इति श्रीललिताशुभकवदं चक्रं
 यगच्छेत्तुम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तिस्रसुल्लयं चक्रं शुभा शुभा
 नमः शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा
 शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा शुभा

उमुः योः न कं रिदिउं पुदयं
 रिह एउयमुत येचिमति वृमउ
 विहउरमुनिमिउरु भुह भयेन
 मुतयः सुमुभरः उरु दलेकमुभ
 गउकलेयगभउरु रिभुहतिभ
 च विदिउं मसमभाप भउभुः सु
 मिः मभगीवमिः मगीरः मुत
 मूमभुः भकलेमिः रिदिउं मुह
 उभुमुं भुह मुहमुगीकवि
 एविमुमुं विमिउं भुह विमं वि
 मेकं मुमिउं भुह भुहउं यं मि
 वं भुमउं भुहउं यं मि उमा मि
 भुहउं विदीरं मेकं विमि उमा मि

३३७

भावभावाप्यभिहितं मगीर
 भावाय कर्तुं भव भूतथा कर्मि
 विमिश्रितेः भाववत्पुत्रद्विष्टि
 भति भुवभलीवः सुपुत्रः यथेष्ट
 भुभावाय कर्तुं विमुक्तं भुव
 भुक्तं भक्तं विनीतं भक्ति
 उः सुपुत्रं भति भुवत्पुत्रं
 कर्मयोगं भाववत्पुत्रः सुपुत्रि
 वत्तः भुवत्पुत्रं भति यत्पुत्रं
 उक्तं भक्तं विमिश्रं सुपुत्रं
 नृभावाय कर्तुं यत्पुत्रं भति
 भुवत्पुत्रं यत्पुत्रं भिन्नं भिन्न
 सुभक्तं भुवत्पुत्रं यत्पुत्रं

मङ्गलद्वयदं विष्णु भिरं विमिहं भुग
 द्वेदं भुगधेद भो मे दिग्भं येदं मित्र
 दुयभमिह नृगयैलं भुगयः मित्रे
 देवद्वयद भमिह भर्तुलेद भमिह प्रले
 द भमिह भुगधेद भमिह द्वेद भमिह
 भद्वेद भमिह सुथालिथं देद भमिह
 वृमजिः यमृ भिमक्रुः सुमृले भु
 कलः सुदं विष्टनृ भि विविजुदुये
 नृमृ भिवृता भमिह भुगदं वेदं
 वेदं नृद भववेदं वेदं नृद भुगदं विदं
 यमृदं नृधृथयं भमिह भुगदं
 नृधृमृदं नृधृयं नृधृगि नृधृमि
 नृधृमृदं नृधृगि नृधृदं नृधृमि

383

भयं तदुक्तं गाय... भुध निधत
 येदवे रगाय... भुध निधत मयीतम
 भवेतः धयेह विभुजे ठव डिमभव
 कुमरं भेति वरुहं मगद भउहं मग
 सुति तदुक्तं चरुमिरीयति तमिह
 उमरुह दग्ग ३ भउति यमुता न
 गय... येदुप रिभुता तमिह रुद्र
 उमउह दग्ग रुद्र गय... येति य
 त्ति रुद्र गाय... तदुक्तं गाय... भुध
 रुद्र धमं येदवे रगाय... भुध रुद्र
 धममयीत भेययवः भवेमपुन
 डिविभुते भुध धं रयं मे धेनेयं
 डिभउह भमुते डिभउह भमुते डि

३४५

प० थं द० मयति धु० उ० र० यी० र० ने० र० दि०
 उ० थ० थं द० मयति उ० र० यं धु० उ० र० यी० र० ने०
 ध० यं थं र० ति भ० ए० कि० न० भ० मि० द० ठि० भ० प०
 भ० यी० य० न० : थ० नि० ह० : थ० उ० क० : कि० थ० उ० क०
 भ० द० थ० उ० के० थ० थ० उ० क० न० थ० उ० क० ह० : थ०
 भ० ए० उ० भ० च० व० र० य० र० य० थ० थ० ह० क० क० उ०
 मी० न० र० य० थ० म० र० थ० म० य० द० भ० भे० ति
 मी० न० र० य० थ० म० र० थ० म० य० द० भ० भे० ति
 य० र० व० व० र० उ० ति० र० य० थ० थ० नि० थ० र०

उवस्मृतिभिर्गय चित्रक द विनलः १
 कथं यमुयैकैरदि चरुमुधिरा कभउ
 वक्रिया ए मं मरुयः पिह्म अउकः ५
 मउउमः पाइ पुम म यै ह पु म्मं वै ६
 रायै दिइदा मत्र दउा पोगा मुठे कु म्म
 मकं पूराग ७ मउक मउक मउक मउक
 उय मउकं उइयै कउ मउकं मं मउक दउ
 मउकं ०० हं म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म
 उयिवा इति म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म
 उः ०० म्म विम म्म म्म म्म म्म म्म म्म
 इति कदम म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म
 ०३ इव म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म
 कनेवउ कद म्म म्म म्म म्म म्म म्म म्म

३४७

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

नमो भगवते वासुदेवाय । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
पितरः संतानं पुत्रि ता दत्ताचार्यदत्तियं कुरुते मृतमस्तुदः । पितरः पुत्रः
सुभक्तं धर्मं वन्दे नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।
नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः । नमः ।

CC-0 Ayaz-Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or a collection of verses. The text is densely packed and appears to be a form of poetry or a religious text. The script is written in a cursive style, characteristic of older Indian manuscripts. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines across the page. The ink is dark, and the paper shows signs of age and wear.

[illegible]

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is densely packed and written diagonally across the page. The script is in an older form of Devanagari, possibly from the 18th or 19th century. The ink is dark, and the paper appears aged and slightly discolored. The text is written in a cursive style, with many characters connected together. The overall appearance is that of a historical document or a religious text.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger. The text is densely packed and written diagonally across the page. It appears to be a record of transactions or accounts, with various entries and numbers visible. The script is in an older form of Devanagari, possibly from the 18th or 19th century. The text is written on aged, slightly discolored paper.

तिमउउमिपमहमिमाहयनं महउ
 पंहीहीहं ठहुद उडिमउवमंममममि
 उवउउमः मिममि मुमनमिमापुडि
 उवमिमुह उइमममिउतामिला
 ममिमु मउमउवकंमंमुमु मरमुपडि.
 उउमयं उपकीपे मममहउ पिउम
 कनेइ ममिमाहयनिमिउ तवउपुपः ३
 महउ मिमलीवमं यमउतायवि.
 कलमहीमयणी. उवयमः २. महउ
 वउ महुममु वउ मवमु महुमु पउपः
 उमपः मुहुमु वयवदमु ठेवमु ७
 मुषव कलमुपमु कलमहउमु महुमु ७
 मुडिमंमकमु वीगहउमु कलमुपमु ७
 यहुमु मवमलममु ७०कममु ७

उद्देशे. भित्तुमुपपद्यते मभिमन्त्रय
 विविचिभिर्भित्तु मिमन्त्रणं मरेमन्त्रणं
 एवमेव उभय उरुका पदु मनु गन्तु
 यथ प्रपत्नीय वाम कुण्ड मरेमन्त्र मन्त्रि
 लुके दक्षमिन्त्रिणी योगमन्त्रवर्क
 रंमन्त्र किमुता यस्तु विमन्त्र मन्त्र
 पन्त्रि त्रिभः मन्त्रमन्त्रिः त्रिभः
 इहः मन्त्रि यमन्त्र एवमेव मन्त्र

मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि

पितृपदं मभिमन्त्रि वेमुन्त्रं कोटियः मभिमन्त्रि
 मभिमन्त्रि नैपतिपति॥

403

22

5621

५०५

5-15

21
5-11

जलकुम्भीं च वृक्षं लघुजमेति विष्णुः। उदके मे
पयःमउत्तिष्ठं मउत्तिष्ठं पविशतः॥

सुखं वामकोशं दृष्ट्वा शुक्रयाश्च लिङ्गको दिगमः
स्वेतं चाम्बु हृत्वं च शुक्तिगल्लमः ॥

यज्ञे पवीर्यकदं नैवं कृत्वा प्रसिद्धं प्रसीतं
नैव कदं पित्र कदा प्रसिद्धं ॥ ५०५

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०५ ॥

पाठुं विना कृतकृत्यं न भवति इति श्रुत्वा
वधय ॥

५३.

३७
 नमो भगवते वासुदेवाय भगवत्पादमंजरी
 भगवत्पादमंजरी भगवत्पादमंजरी
 भगवत्पादमंजरी भगवत्पादमंजरी
 भगवत्पादमंजरी भगवत्पादमंजरी
 भगवत्पादमंजरी भगवत्पादमंजरी

सुप्र० ८ मोपुंभोभृयै संकभापृयै
 मोभक० पिउं उनधामभिकं चमव ॥ ७ ॥
 सुप्र० ८ विमुंकेमं कट्टर पृयै सुगुं
 यभदक० विमोहं सुसुभालिहं विहं
 नेभहृयै मोभक० पिउं

५०८

श्रीगणेशाय नमः

सुगुं

शास्त्रिये उमाशूरे पुंलिउं हिराकपृयै रवादिउं
 अभहृवुं पापं नंभंनेयेकाका ॥

यस्यैवतुः

चनेकपिपुमादय धसूत्रं यउं भुंउं जहवेहृनयं
 कउंने कपिपुयसुवउं मोभयपिउंभउंउं कवुकवुं
 यरापय मडुकां मल्लनं मल्लनं माननिलिपेउं ॥
 पिउंपालि कडां सुधं पिउंपाउपुनिः लिपेउं चनेकगलचं
 रमहृदं सुववे ॥ पिउंविउंको कडां सधं पाउपुनिः लिपेउं
 पिउंकोः सधयै विमि वमहृदं सुववे ॥ मि. १३० ५३
 वैसुववसुवमउं पिउंपाउसुव विमि मल्लनं
 कडं सधं कडां निउं सुधं यधायि ॥

पुतनीधतु भदक. तिमोः संभुमनायै
 संशुभुनयै भेभक. धिउ द्वितीभमि
 क अजीय वसं ॥ ३॥ संप्रकुस. ८

तिमोः संभुनयै भेभकलयै
पादुपासिके सउज वसंभि ॥ ५॥

तिसुंनं धीकद संधिभूपि भदक.
 तिमोः संभुनयै तिसं भेभकलयै
 भेभकल. धिउ अजीभामिके पादुभा ॥ १॥

संप्रकु. ८ तिसं पं सं उधिह संपउज
मिह भदक. तिमोः सं उधुं कुंभालिह
भेभक. धिउ सउजभामिके पयं ॥ ७॥

संप्रकु. ८ तिसं लं उधिह संपउज
भदक. तिमोः सं उधिकदं विभल
यै भेभक. धिउ पादुभामिके मयुमं ॥ ९॥

सुप्र० ८ मो पुंभोभुयै हं वभणपुयै
मेभक० धिउ उवधपुभिके सुप्रमे व॥७॥

सुप्र० ८ सुमे० पपुवै सुठभुयै भदक०
मोः पुंभगीशु हंभद नवपुयै मेभक०
धिउ धपुभिके नवमे वभंमि० ॥ ०० ॥

सुप्र० ८ विं सुं कं डवुवडयै सुं सुपुयै
भदक० विंभो हं सुं सुभालिहै विं सुं
मेभडयै मेभक० धिउ सुपुभामिके सुमे

वभं ॥ ०० ॥ सुप्र० ८ विं सुं सुं उरिवै
सुं सुमपुयै भदक० विंभोः तं ससिहै विं
सं सुपुयै मेभक० धिउ सुपुभामिके

सकमे वभं ॥ ०१ ॥ सुप्र० ८ विं
सुं सुं सुं सउठपुयै सुं विम्वेरीहै भदक०
विंभोः तं सुउयै विंभवविहै मेभक०

सुंभरु-८ सिंभुं००ं उंमिथकयै सिंभुं००
यैभरु-क० सिंभोःचुःचभुडीकलयै
सिंभुःशुलित्रैमिभक० धिउ कुनभं
वज्ररिके मयु रसै वभंमिभुणनमः॥०५॥
उडि कलप्रशनं भभानुभभिकेपु ॥

५॥

विष्णुसैक रमै दनि विष्णुगन विधिः ॥
 विष्णुगन प्रभुय दण ॥ धिउ मिर्वनेश
 य नदय सुहे सुहे ठिके सुहु भवम
 उभये प्रसभाभिके प्रसम रिपल्लिके
 द्वितीय द्वितीभाभिके अतीय पादुपा
 निके गउऊ अतीभाभिके पादुम गउ
 उभाभिके पवु पादुभाभिके मयुम
 उरधामभिके सुधुम धामभिके स्वम
 मयुभाभिके रमम सुधुभाभिके लकम
 स्वभाभिके दुममी रमभाभिके इयेममी
 लकमभाभिके गउममी भवैकम
 भाभिके पादुम उरभंवदुगिके धेउ
 प उरभंवदुगिके मयुम सुवनरणे
 भुवनमः ॥ सुणमहा मयुम ॥ ॥

212

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
शुक्ल पद्म भगवत नमः ॥ अष्टिपुत्रे
 ७ अष्टपुत्रा लंकिहं विदः अननुमत
 ये शुभ्राय सुं सुदुःखाय इमिपुत्राय
 अंमिचउदय इपुत्राय कलपय इदनीद

ॐ ओं क० ॐ गन्धर्वक० ॐ वैद्यकीक०
 ॐ लेलिहनाक० ॐ गेहीक० ॐ वैद्युताक०
 ॐ विरूपाक० ॐ भेदेकुष्ठाक० ५५
 यमयै भमनमयै कूलिहै श्रीहै
 उहै पृष्टै धातुं मोहै भगीष्टै वृंभमलि
 है ममिहै हस्तयै लंकु कयायै
 मभ्रलभल्लामययै नभउष्टयै
 पिउः सिवगेउ नद सुष्टै वृमदिके
 सुष्टै भवभनुभयै लकेष्टिष्टै सिवशुष्टै
 सिंभः मः हस्तयय सुष्टै भवभनुभ
 यः पिष्टैः भुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः ॥
 सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः
 सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः
 सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः
 सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः सुष्टैः

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Collection. Digitized by eGangotri

सिंभोः उं भनेदुगण्यै भेमकलयै पिउः
 मिवेगेउ नइ उतीभाभिके धपुम सिंभः
पिङ्गः सुध० ॥ १॥ सुप्रि० सुमुता० ।
 लंमिहं सिंभं पं सुउदुगिह्यै भेमकलयै
 सिंभोः उं भलिह्यै भेमकलयै पिउः
 सुउउ भभिके धपु सिंभः पिङ्गः सुध
उध० ॥ १॥ सुप्रि० सुमुता० लंमिहं० सिंभं
 नं पङ्गुयै भेमकलयै सिंभोः उं वि
 भलपुयै भेमकलयै पिउः मिवेगेउ
 नइ धपुभाभिके सुधुय सिंभः पिङ्गः
सुध० ॥ ५॥ सुप्रि० सुमुता० लंमिहं० सिं
 भोः उं वगण्यै भेमकलयै पिउः मिव
 नेउ नइ उद्यनभाभिके सुधुम सिंभः
 पिङ्गः सुध० नमः सुध० धमदुसु ॥ ७॥

सुप्रि. सुप्रु. लंकिटं ति सुंमं ठं ठं
 राष्ट्रयै अदकल्यै ति भोगं भद्रं
 राष्ट्रयै भेभकल्यै पिउः सिवगेउ नदु।
 धम्मभिके नवमं ति सुंमः पिउः सुप॥०॥

सुप्रि. सुप्रु. लंकिटं. ति सुंमं इष्टं
 यै अदकल्यै ति भोगः इष्टं भेभकल्यै
 भेभकल्यै पिउः सिवगेउ नदु मधुमा
 भिके नवमं ति सुंमः पिउः सुप॥०॥

सुप्रि. सुप्रु. लंकिटं ति सुंमं सुप्रु
 यै अदकल्यै ति भोगः ति ठं राष्ट्रयै भेभ
 कल्यै पिउः सिवगेउ नदु सुप्रु भभिके
 एकं नवमं ति सुंमः पिउः सुप॥०॥

सुप्रि. सुप्रु. लंकिटं. ति सुंमं ति सु

वेतिहृष्टयैभदकलयै तिमोः तंभव
 त्रिहृष्टयैभेमकलयै पिउः मिवनेउ
 नउ नवभाभिके इयमे तिसुंभः पिण्डः
सुप३५॥०३॥ अग्रि० सुपु० लंकिहृ०
 त्रिसुंभं तं नमपमिहृष्टयैभदकलयै
 तिमोः तंभव त्रिहृष्टयैभेमकलयै पिउः
 मिवनेउ नउ नवभाभिके इयमे तिसुंभः
पिण्डः सुप३०॥०४॥ अग्रि० सुपु०
लंकिहृ० त्रिसुंभं तं नमपमिहृष्टयैभदकलयै
तिमोः तंभव त्रिहृष्टयैभेमकलयै
पिउः मिवनेउ नउ नवभाभिके
इयमे तिसुंभः पिण्डः सुप३॥०५॥
अग्रि० सुपु० लंकिहृ० तिमोः तंभव
त्रिहृष्टयैभेमकलयै पिउः मिवनेउ
नउ नवभाभिके इयमे तिसुंभः पिण्डः सुप३॥०६॥

सुप्रि० सुमुता० लंदिहं० सिंमुं० सुं मयल
 मयलपुष्ट्यै मयकलयै सिंमोः सुः सु
 मयपुष्ट्यै मेमकलयै पिउः सिवगेरद
 उन मेवदुगिके मेरुमे सिंमुंमः पिङ्गः सुप

५॥०७॥ सुप्रि० सुमुता० लंदिहं० सिंमुं०
सं सुमयपुष्ट्यै मयकलयै सिंमोः सुं
सुलिहपुष्ट्यै मेमकलयै पिउः सिव
गेरद० उन मेवदुगिके मयुरुमे सिंमुं
मः पिङ्गः सुप ५॥०७॥ सुप्रि० सुमुता०

एवं भक्त रम्य दत्तं धिष्णु कुप्युन
 त्रुभा एक रम्य निवधि शुद्धवद्वि
 कल मूयडा नृपु धिष्णु मातृभू ।
 कल भूषण धितं भूयडा एवं मूयडा
 स भामात्रे भूषि सध ---- अलं
 मद्र दलून मद्र धिष्णु भूयडा ॥
 मूयडा मद्र भद्र विभूयडा न उद्रयभा
 धिष्णु भद्र कल भामा मूयडा धिष्णु
 यडा मद्र पक्ष मूयडा रिया मद्र
 भामात्रिभा अलं मद्र धिष्णु उद्रय
 ल भामात्रिया रिया दिक्क कद्र
 कद्र पक्ष धिष्णु मद्र विष्णु भूय
 भयी भूय भूय कल मूय ॥

उनेनु विभुवद्विपुं भुववंवद्वा वधि ॥
 विभुवमीति उभुवउकल प्रशनीयं ॥
 अशुकल विधिवद्वुणयडा ॥ अमेग्व
 मीप वेदो सुनकपउ इद्वल धिपुम
 कलमेवनेमकुदडा यवभुमीप ॥
 प्रउ प्रउ धिनीमेव धिपुलपु उद्वि
 ली मभुव रुभुराहुपु इद्वल विभु
 वेधिनी मभुवद्विली इद्वल इद्वमीम
 मनेमनी तउद्वममभुमपु प्रद्वमीप
 विधनउः ॥ अशुचप्रशयहुव ॥
 मीपुम इद्वरीधेव कलपुधेव वि
 इमः इद्विल्लिलिद्वनम विधुउ
 रुक रुकली मदे सुपु कल प्रद्व
 लक्ष्मीमाया भुव इद्वः तउद्वम

भासध प्रष्टवद्रो विण्णः ॥ सुष्ठुनर
 पण्ड ॥ सुभउद्रु निनी सुष्ठुभु सुवि
 नी भभन उध भवेन्न भलिनीम ।
 विमल वाम सवम भद्रनरु नेभडीम
 रुद्रु वे गेदिणी उध हृदिनी भवद्रम
 कलमद्रु प्रकीर्तितः सुनर पण्ड प्रष्ट
 सु भभन भभिके सुष्ठु ॥ सुष्ठुद्रु
 लभ प्रष्ट ॥ वद्रिभद्र भेभकल ॥ ॥
 प्रदीपु मद्रनी धेरु अगम भभकली
 वेष्टुती लेलिदनम गडिमु धेरु विरुमः
 पण्ड वद्रिः भभ प्रुता मेदिमुद्रु कल
 मम ॥ उडि वद्रिकल ॥ भगीमिः सु
 लिनी प्रष्ट उधनी उधनी उध पाणि
 नी रुविवाद्रम उरुवेडी उधवम मड

ठभ भुण्डन पद्मगठ उमेपठ तत
 शुद्धम भामेषु प्रहृष्टिपु विठनतः ॥
 उडिदकल ॥ प्रध यव भोभनं प्रीति
 उडिदकरी उव एडिः वडिः करी भोभु
 भगीष्ट गं सुभालिनी ममिनी रुद्रुतलकी
 सुय भद्रुतभाद्रुत सुभुजकीम विद्रुय
 रुद्रुमिद्रुय गद्रुमः उडिभोभकल तव
 रुद्रुम रुद्रुम वडि नुपुपि प्रहृष्ट ॥
 रुद्रुम रुद्रुम विवम पिपु वडिदकल भगीम
 रुद्रुमिद्रुय भोभकल विवि वडुष्टः ॥

[illegible]

उडिऊपुपु ॥ रिंकटा वल्ली करालं को
 भिळण उडिऊपुपु वल्ली करालं भा ॥
 भुवमे पचण्डे रुद्र उडगं रुद्रं भुपयड
 यडधस भुलं कुदज उडयति विष्टं भं
 भुष्ट वणीमुद भनयनमः उडभनं
 भुपुष्ट ॥ भुंका वड वणीमुति सुगमु ७
 भुतिष्ठ ७ भुतिष्ठ ७ भुतिष्ठ ७ भुतिष्ठ
 उडि ७ उडवति नभसु उडवदुनादि
 उड एनं कुदज ॥ नीलेदल मलमभा
 भुउ भुल्लपलेमनं भचल काल भुल्लं
 भचल काल भुल्लपलेमनं भचल काल भुल्लं
 वीभा भुयय भुयय भुययः वडभुनेयति
 भुयय भुयय भुयय भुयय ॥ विष्टव
 उडवणीमुति पण्डे भुल्लं सुष्टे भुल्लं

सुममनीयं श्रुत्वा ममालंभं भाग्यं सु
 क्तं प्रथमं विवेकं प्रथमं श्रुत्वा ॥
 कुं वणी सुदेनमः ॥ अतिप्रसन्नं मिनमः ॥
 सु ॥ मिनमः मिनमः ॥ अतिप्रसन्नं मिनमः ॥
 वणीमममि श्रुत्वा येनिभुं प्रसन्नं मिनमः ॥
 उतः कं प्रसन्नं सुममि मनीय ॥ दण सुप्र
 प्रेकं कं मिनमः कुं सुवउ प्रसन्नं मिनमः ॥
 मिनमः मिनमः सुप्रसन्नं मिनमः ॥ ममालंभं
 मिनमः सुप्रसन्नं मिनमः ॥ दण सुप्र
 मयमिदं अतिप्रसन्नं मिनमः ॥ सुप्रसन्नं
 नउकिपउ ॥ उतः किल मिनमः ॥ मिनमः
 सुप्रसन्नं सुप्रसन्नं मिनमः ॥ सुप्रसन्नं
 मिनमः सुप्रसन्नं मिनमः ॥ अतिप्रसन्नं
 मिनमः ॥ उतः सुप्रसन्नं मिनमः ॥

विंशं च न कलनं कोमिभुद ३ विं
 रं च भीमं कलनं कोमिभुद ३ विं
 चयः भः मिद उद्भापं कोमि ३ विं
 प्रमुं विदु उद्भापं कोमि ३ धमि ३
 भापं ३ शीवं ३ मुंमै ३ वड ३ उड ३
 ह्ययं ३ उड ३ नहि ३ मड ३ कवि ३
 उड ३ उड ३ उड ३ धमि ३ मुमु
 डिभुम्वीः ३ विंशं च भीमं नयनं
 भद्रं ३ उड ३ उड ३ उड ३ उड ३
 विमुं प्रभवा विमुं विमुं विमुं विमुं ॥
 वणीमुः प्रिगु उड ३ विमुं ॥ उड ३
 प्रय नमः ३ विमुं ॥ विमुं चयः उड
 कोमि ३ उड ३ उड ३ उड ३ उड ३
 भुडक मुदि उड ३ ॥ विमुं ३
 च नि ३ उड ॥ विमुं चयः उड

एनं कोमिश्वा ३ एवं मभदुतं भद ३
 सिद्धयन्त्रं वक्तुं विधानं कोमि ३ मभ
 दुतं ३ ॥ सुभुधुपदुशालन ॥ दण
 सुप्रिं परिमप्रुमिदण ३ पदुमि ३
 परिधिदुमि ३ दण यस्तु सुभुति
 गमि दण यस्तु सुदु मप्रि मभुमिदु ॥
 प्रवेइयः पुत्रः पदु पदु पि गताः भुयः
 प्रकष्टः सुभुत्तु ॥ दण यस्तु मिदुय ॥
 दण परि धीन सुभुमि दण ॥ ७३ मड
 दिदु परि धीन सुभु ॥ उदुय पि प्रचदि
 सुभुमि विधुन मडु सुयं सुययडा । प्रवे
 सुभुमि नमः । दण यस्तु नमः । उदु
 मभुमि वयनमः । पदुमि विधुनमः ।
 उदु प्रवे सुभुमि लिदु परि धीन मभुमि

[illegible]

शुक्लभुङ्ग ३ शुक्लभीकभुङ्ग ॥ ७३५
 विभुं विभु ॥ शुक्लभुङ्ग यनमः ७३५
 मङ्गभुङ्ग ३ मङ्गभुङ्ग ॥ ७३५
 विभुं विभु ॥ पद्मिभविभुवनमः ७३५
 विभुं विभु ३ विभुः कभुङ्ग ॥ पद्मिभवि
 भुं विभु ॥ उडभममिवयनमः ७३५
 भममिवयभुङ्ग ३ भममिवकभुङ्ग ॥
 उडविभुं विभु ॥ उडभमः वणीभुङ्ग
 नमः ७३५ ॥ उडभमः वणीभुङ्ग ००
 उडः उडभम ॥ भविभुङ्ग उडभमः
 भमभुङ्ग मिव वणीभुङ्ग नमः भुङ्ग
 भविभु विभुपमा ॥ वणीभुङ्ग मिव
 ७३५ विभुभुङ्ग ॥ भममिवयनमः मडवि
 मडभुङ्ग भुङ्ग लल निव ७३५ ॥

त्रिंशुभः मिव पिं उद्यमिभ्रु ३८
 सुषभ्रु सुवमंभ्रुः ॥ त्रिंशुभः उद्यमंको
 मिदय त्रिंशुभः प्रेकां. त्रिंशुभः सुव
 पुण्णंको मिदुंभ्रु ५३ः उद्यमं त्रिं
 शुभां ३ प्रेकां. सुव २२ भद्रः ५३ः
 शुभां ३ उद्यमं प्रेकां. मष्टनभ्रु
 भद्रः । ५३ः शुभां उद्यमं प्रेकां भ्रु
 नभ्रु भद्रः ॥ उद्यमं पद्मपद्म सुवभ्रु
 मंभ्रु मिव मक्ति उद्यमं प्रेकां ॥ मिव
 मक्ति मंभ्रु भद्रः गवैरमः सुवभ्रु
 उद्यमं मिवयनमः मक्तियनमः उद्यमं
 सुवभ्रु मंभ्रुः ॥ सुवभ्रु सुवभ्रु ५३ः
 सुवभ्रु प्रेकां पद्मभ्रु ॥ उद्यमं प्रेकां
 को मिदय त्रिंशुभः सुवभ्रु ५३ः को मिदुं.

उद्भूतं भूतं ३ येनोभूतं नभा ॥
 उः प्रहस्यमानं गुरुकं गुरुयं नगपसा
 कां कुरुय नभः सुपुष्टं मगयः उः
 सुभृशिवर नयनं ॥ विदः कल उदकं
 कोभिदः कल ॥ उतिपुगं भूतपनयनं ॥
 विदः कल मंभूतनं कोभिदः कल ॥
 उतिशिवं मभूतपनयनं ॥ उदकं म
 मं कं प्रहस्यमानं पशुभीकृत ॥ विद
 ए प्रहस्यमानं कोभिदः कल उतिभूतं
 उरं निरुक्तं पशुभीकृतं मभूतं
 कदः अं पुनः सुलभं नदीगण
 नभा ॥ विदः कल रीगणं कोभिदः कल ॥

उद्धेत्तुं कं॥ लिङ्गं भः पदप्रीकां कं
 भिनमः॥ ७३ विद्वे कियेता॥ विद्वे
 पूकानं को भिद्वेता॥ भलनभाङ्गनहि
 भन्नुभा उम भन्नुयुभा उी उउ प्रनगं
 भलनभयता॥ ७३ः सुष्टु धरे परिम
 रुद्रयं प्रचण्डिभापं मं भुष्टु ण्डयन
 नहि उयष्टयता॥ ७३ः विद्वेता पिद्वेता सु
 याय भदयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 भष्टु भुष्टु यनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 भिद्वेता सुयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 ७३ः विद्वेता सुयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 ७३ः विद्वेता सुयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 ७३ः विद्वेता सुयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥
 ७३ः विद्वेता सुयनमः॥ ७३ः विद्वेता सुयनमः॥

दें दें देः मभउं के गमिभ उष्टि दयति
 यवति ॥ उउः सुष्टु गत्तमा ॥ सुष्टु
 माः मभुमिभुभां पथकां पां सुष्टु
 भुगल्लभां सुष्टु लेकः पुतिष्ठिउः
 मिष्टु रिक्के भगमि यउ कि लिपुभा
 गउ उउचं भां मभमं मिनाम भुप
 गम्भु उउनेवः धिउः मिवगेउ भुम
 सुष्टु पगलेक मिवधमवी पुपुउं मि
 भां मभय भिनमः ॥ उउः पल्ल सुष्टु
 नवः डिंभः सुष्टुः सुष्टु सुष्टु गी
 सुउत्तु मभमं भुगल्ल मभुमं भुवभेभण ॥
 उउः धेगुगम रिक्कमा नीयः मभुमं भुम
 मभुगल्ल कवमं नभउं मभउं उउउ ॥
 सुष्टु गळक भुमं पुष्टु ल दायीग

एनं कोमिहल उडिगोमपि डिवां
 इभयह वद्वि लिपेडा ॥ कलपुंनलं
 कोमिहल उडुमु भुमा भमिहल ॥ डिमुं
 मः मभउं कोमिभ उडुमे कलपु डिमि ॥
 उडिममं धुः ॥ उडः कलपु भए नवलि
 कलपु रणयेडा ॥ गलपु जयै प्रव कलपु नव
 सुमये प्रदुमये मलाल मलपु गिलु नैउ
 वमीकउ पमिम उडुगलपु वयह सुउ
 मयै उडो मजिमये मेमप मव मिदि
 प्रमये भए उडिमभपु ॥ उडः डिमयेडा ॥
 गलपु जयै भुड ७ उडः प्रलपुये प्रयै
 त्रिउं डिमुं मः मिवा प्रव शिहल कलपु
 मिभुड कोधरण ॥ ० डिमुं मः शिहल
 मत्रिणि मुभुड कोधरण ॥ ३ ॥

ॐ नमोः किं हि नृणां यदुह ॐ ०:०:
 मित्रं प्रय भवति नृण्य नमो नैव सुं निव
 मयामि नमो ०:०: दीधर्य ॥ मेव देवैरि
 यष्टा ॥ सुमे सुमे ॥ प्रथमं लय
 भव वधुल्य जमय नमिने भवक
 लय हिं सुं भः सुभउ सुगे वयभुदु
 हिं सुं भः सुभउ भव ल सुभउ हिं सुं
 ह्रु. हुं मिगम गमिपाय हुं कवम.
 हुं नैव हुं. वरा सुभय. हिं सुं पेग
 सुं पेग हुं पेग पेग उ ह्रु भवतः मच
 भव हुं नम सु नउ कुय हुं हिं सुं पेग
 भव हुं ह्रु य. सुं पेग हुं उ ह्रु ल मि.
 पेग पेग उ ह्रु सुलि ह्रु मिपा. भवतः
 मच भव हुं धि ह्रु लय कवम. हिं
 सुं भः हुं हिं कुय य नउ हुं. नम सुभ

कुयहुँ पुहुहुय भळ पामु पडा भूय
 सुभूय छण ॥ कं रैमपवकुय भूड
 यंडुहुय वरु • रं सुधोर वरु • वं वभरु
 वरु • लं भेहेसउ वरु • ॥ सिंही सुधोर
 सुधिहुं वरु भूड ॥ कं रैमानव • यंडुहुय
 रं सुधोर व • वं वभरु • लं भेहेसउ व •
 सिंही सुधोर ॥ १ हुं निधुल भूधुहुं
 गवय भूड ॥ २ हुं सुधोर ॥ सुधोर गधुः
 गधु ॥ ३ हुं दं दी हुं दे देहुः धिउः मि
 वे गेउ सुधु भूधु भूधु गि के मि व सुधु
 गधु लं को मि भूधु ०८ ॥ वं धिउ भूड
 गधु ॥ ४ हुं मरु को धीं सुधु धी
 मरु कोः नवधु वरु धु पल धधु
 नुः धु की धिउः ॥ ५ भूधु गधु ॥

विमललङ्का भववृक्षयः • कीमच्चैवदुःख
 प्रदुयेमिर • कुम्भवमकुये मिया • केन्नु
 उवलकुपिल कव • केन्नुपरीमितउरमेन
 इय • ८: सुपुडिउतवीदय सुभुयदण ॥
 डिदं भडलकु केन्नुमनि डिहीमीलकि
 भडलकि भवकभपु • भवभोठपिणपि
 नि सुठिभं पुयसु ३ भव भवगउ सुप
 भवदुप विमोदिनि ह्रीमः सुडा ॥ डि
 कुम्भवेधं कमु नमभनंमदि विउलकुभुः
 डिह्रीह्रीमीगभुयेगीसुरि ठवठवटुभ
 वकभपु • भवभोठपुयिनि ह्रीनमः
 डिह्रीह्रीनय डिह्र • ह्रीमि • कुमिया
 दुः स्व • गन्दु • येन्नुभुय • डिह्रीह्रीनी
 लकठय ॥ डिगडिपुप्रपु किंभुपिपि

मिषः

क.

ठयं ममभुपभित्तं यदिसकुभसकुंवा
 उन्नरुवडिसभय ०:०: भुङ् ॥ धिरीं श्री
 लीं भुङ् भुङ् भुङ् । धिरीं भुङ्
 मिषय । धिरीं भुङ् भुङ् भुङ् भुङ्
 लवणी सुदभु पभुके नमः धिरीं
 भुङ् भुङ् ॥ भुङ् भुङ् ॥ धिरीं लीं
 लीं लीं भुङ् धिरीं भुङ् भुङ् भुङ्
 १ क भलवयं भुङ् भुङ् धिरीं भुङ्
 भुङ् लीं धिरीं भुङ् भुङ् लीं ॥ ७ ॥
 कलं लीं भुङ् भुङ् भुङ् भुङ् भुङ्
 भुङ् भुङ् लीं कव । यलव लभुं नमः
 भुङ् भुङ् ॥ ११ ॥ धिरीं भुङ् भुङ् भुङ्
 भुङ् भुङ् भुङ् भुङ् भुङ् भुङ्
 भुङ् भुङ् भुङ् भुङ् भुङ् भुङ्

विम्रीम्रीह्रीह्रीः तं लोभो भिदुलकु ॥
 धरभदं भिनिदु. निवत्तमभनप्रद मि.
 विधमेधुवधुमभिनि म्मिण. भकलदुति
 उगिभुल्लम दलिनिक. भत्ताधरभु
 ठिउगिति न्द. भकलमउधमधिन
 सुधु. ॥ विह्रीं ह्रीं लक्ष्मीव भुदवय ॥
 विह्रीं म्रीं ह्रीं सुंमं मगिदयै । ह्रीं सुभं
 विह्रीं वं वभरुचैरवय । विह्रीं नभेठ
 गवति कैरवि वणीमृति भदपूद भदपू
 ठव ठगवैतु मागयै ह्रीं भुद । विह्रीं म्रीं
 ह्रीं म्रीं दः ठगवैतु भुद विह्रीं सुंयि
 गीमुद विह्रीं म्रीं ह्रीं ठगवैतु विह्रीं म्रीं
 गं लोभोः ठगवैतु म्मिण ह्रीं भुद । ह्रीं म्रीं
 सुभनि ॥ विह्रीं ह्रीं सुंमं मगिदयै वि
 ह्रीं म्रीं ह्रीं लक्ष्मीव भुद भभभचमसुभुद ३

मन्त्रमुखा। लैन्द्रयवन्दुदुय।
 ॐ नमो यम० सं यमयम० सं नैरायोप०
 वं वमन्त्रयप० यं वयहृष्ट० कुं कुवाय
 गम० सं मीमन्त्रयि० सं वृद्धलेप०
 सं विष्णुवम० विष्णीमीसुवृद्ध० ॐ दीप्तदे
 कुं कुभादे वेष्टुहै वगै लैन्द्र ममूद्ध
 मडलैष्टु सुष्टुमिष्टुं वगमममूद्ध०
 कुमगैठमं विष्णुग० लैन्द्रवगम०
 ममूद्धिमुष्टु० पूष्टुपडिमन० गमपडि
 गम० मडलैष्टु० सुष्टुमुष्टु० सुष्टुमुष्टु०
 गमय वमूकि० पमू० मडपमू० उमू०
 कूष्टु० ममूद्ध० कलिष्टु० वमूद्ध०
 ममूद्ध ममूद्ध लैन्द्रय पमूद्ध सुष्टुमा०
 सुष्टुय गमय डिमुल० पमूद्ध ममूद्ध०

कल्य मग्य धिनक्य वग्य नृठ
 याय पङ्कन्य वीनय रुभवे ५५
 य भङ्गन्य रुपल्य रुवयरुवय
 किडिभुय मचयरुवयगलुभु
 रुययरुवयपव ५ सुधउयरुवय
 रुउम ५ यययरुवयभेमभु ५ भडुम
 वाययभुभु ५ भदुभु ५ छीभययरुवयय
 रुभानभु ५ रुमनरुवयय सुकभुभु
 भडुमउवङ्गय वभरुवव ५ सुधे
 व ५ उदुमपव ५ कपल्लमठेगवय ५ ३
 रुभुमीधय माकमी ५ कुम ५ रुेङ्ग
 मल्लि ५ प्रल ५ नेमठ ५ प्रङ्ग ५ भव
 ल ५ काभभभुय कीर ५ उदु ५ मणि
 ५ ५ ५ भडु ५ भुग ५ सुङ्गउडय

विष्टुः मित्रः अमुमज्य सुनमः
 क्रियामः भद्रं पुनः परमं पुनः सुनमः
 वल्लभं पुनः उद्विष्टं पुनः कलमं पुनः दंनिवृत्ति
 कलय निवृत्तिकल रिपउयेऽङ्गल
 दीपतिभ्रुकलय प्रतिभ्रुकल रिपउ
 ये विष्टुः पुनः विष्टुकलय विष्टुकल
 रिपउये मय्यैः सानुः कलय
 सानुः कल रिपउये मय्यैः ८ः
 सानुः उीउः कलय सानुः उीउः कल
 रिपउये भद्रमिवयः ॥ ६ ॥ भद्रमिवयः
 भद्रमिवयः भद्रमिवयः भद्रमिवयः
 यः सनमयः सनमिवयः पूरयः सु
 सुयः योऽपि ० भद्रमिवयः निवृत्त्येति
 नृष्टान्दयः जिनमः मित्रयः भद्र

उरुमि दुग्मा. सिद्धिंभः भवभुम्भ
 अधिरभुम्भदोषण ॥ ५३६ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण
 धण ॥ ५३७ ॥ ५३८ ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥
 सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४१ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४२ ॥
 सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४३ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४४ ॥
 सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४५ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४६ ॥
 सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४७ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४८ ॥
 सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५४९ ॥
 दामोपण. सिद्धिंभः भवभुम्भदोषण ॥ ५५० ॥

यदि धा मुनैः देहि इतिः कलयन्तु
 भित्तुपति उन्पयः पीतंगभीमकं
 कं वभभानं भित्तुमि दमि दमि दं दं
 यन्निभं वत्तुमा ॥३॥ तत्तु भित्तुमि
 क्कवत्तुम मालिनी मित्रुयदृमिगं
 न्द नभयैरसुगीमपि तिष्ठं पितुः मि
 वेगेत् मित्रपदवीपु पुत्तु पदपुः
 इति कत्तुय उत्तुम पुयसि
 निचि विवि पुत्तुम मभुवोपरा
 द ॥ उत्तिपुत्तु उत्तिपुत्तुम पुत्तुम
 त्तिदे मत्तुवत्तुः मत्तुवत्तु मत्तु
 पुत्तिपुत्ति क्क वयुत्तु मत्तुवत्तु
 पुत्तुम क्क तत्तु नि मत्तुपुत्तुम नि पु
 तिपुत्ति क्क मत्तु लल मत्तुलिपु

पमुधामविभुक्ते ठवति भवतीकुभान
 कलभंयेति भवकने मिहं ठवति
 मिवभभुयसभानभु मिहं भुक्ते
 मभन मवमेष्टा पुभन न गक्रगक्र
 मुभेद्रुमभा ॥ ७ ॥ डिमति कलमनाल
 न पागपाउं कुदाउ ॥ डिठरा मुभु
 यठरा उः ठरा मिवपिं विभुद्रुमि
 ठरा उ ठरा यस्तु भुभतुडिगभु ठरा
 यस्तु भुद्रु भतुडे नयमि ॥ ३ ॥ मुणे
 कभापनभा ॥ १ ॥ मक्रकेठि कुंथपं पं
 कभुद्रुं मयउ उक्रचं नामभायाउ
 उमः भुदेमये यषा ॥ १ ॥ भावद्रु भुमष्ट
 उ पायमिहं उयद्रुं उक्रचं नामभा
 याउ देभाद्रुभ नदमुर ॥ ३ ॥

उद्धितमिविकुठ्ठा देमन नलभणः
 उद्धव नमभायतु देमन नलभणः॥३
 मंभाभिमिद्विदे मेद प्रयसितुं उपसुतं
 उद्धव नमभायतु देमन नलभणः॥८
 कृमभुभतु रुषाय निहन्तुणायम ।
 यमउद्धमभेकय पुनरागभनयम॥१
 कृमभुभतु रुषाय निहन्तुणायम
 दय विमुभुतु प्रभील्लवम नमेभुतु
 हे प्रयदिउधुः पुनरागभनय॥१॥
 उद्धिप्रकृमभनम॥॥वद्धितः मद्ध
 प्रोपुल्लयामनमंभुपयत॥॥
 उद्धिमिद्विप्रकृमंभुल्लवम॥॥

० यक्षपुगी
१ मोरिपुगी
२ नगछवनी
३ गजचपुगी
४ मेलपुगी
५ कूपपुगी
६ कौस्तुभपुगी
७ विमिश्रपुगी
८ वस्त्रपुगी

९ भउभुपुगी

१० जेठपुगी

११ पयवधपुगी

१२ मीउपुगी

१३ वरुणीतिष्ठ

१४ यक्षपुगी

१५ वेङ्गपुगी

१६

माहात्म्य

भाषित

यक्षपुगी

मुद्रपुगी

रत्नपुगी

भगवत्पुगी

कउपुगी

विमिश्रपुगी

लक्ष्मपुगी

नेपुगी

मधुपुगी

हस्तपुगी

पुष्पपुगी

उत्पुष्पपुगी

सुप्रिष्ठपुगी

भवलपुगी

मन्त्रपुगी

दिपुपुगी

सुप्रिष्ठपुगी

सुप्रिष्ठपुगी

शुद्धमान

459

नृममिव नृकलिष्टः ॥ सुमेरुमीप
 यं तु इ मीपान् वडुष्टेभयं लिष्टः ।
 उदष्टे वडुष्टेभयं लिष्टः उदुपरी सु
 भयप्रस यथा ॥ सुभनयमः पदभन
 य प्रुडभनय ॥ उदुपरी पडुनिमेड ॥
 मिष्टुप्रुयभंजुदडा ॥ नृनमेधलि
 नृप्रुविणय उडप्रल नृगडुजिडं प्रु
 नृनभंयी वडि माण कलं भुधपुष्टभा
 नृप्रुप्रक गडं प्रुपय उदमडु भु
 वडुप्रल नृमुप्रुल उडुडी प्रुड नृ
 उं नृडु उडुप्रि नृगडुवे पति नृप्रु
 पविष्टः डिनडु मकवडु प्रुडुप्रक
 नृप्रु मडु प्रुलः वमः कृकि मि मडुप्रि
 विष्टुडी प्रुडुप्रुं गडुमडुपी मडुप्रु
 नृमे पमणैः मडुप्रु ॥ वडिः नृकिलप

उंभयद्वय ॥ सिद्धीमधिकथा लिनिभुदः
भूत विहङ्गयः साक्षिभिः कथयिष्ये
मिषाः लिनिः कः भूतः कः सुभुः ॥
सिद्धीमधिकथा लिनिमभालउवेगवे
नमः सुभे पधुः उः भङ्गलुः ॥
सुधमहेन यमात्रिकः उ सुदुतावडा ॥
शुतः उगवेगेश्वर मय्यु पामत्रिणी
काकलप्रभुजं उलेभय कथयये म
किप्रः सुउप्रक निमित्तं सुंरुतिहम
कलः सिक्कमधु ॥ कलप्र दलप्रशु
कलप्रभुद ॥ कः सुभुयद्वय पिउ
उगवेगेश्वर मय्यु सुवेननं भुग्नमः
सुभनयनमः सुभमकु वसिष्ठे पये
लवय लीर लवय मय्युप्रलय

दक्षिणाय नमः अक्षय्यं नमः मित्राय
 भद्राय नमः शुभं नमः सुखाय नमः
 वसुधाय नमः कर्माय नमः रात्राय नमः
 भद्राय नमः उदयाय नमः पश्चिमाय नमः
 उत्तराय नमः दक्षिणाय नमः कर्माय नमः
 रात्राय नमः सप्तमं नमः भद्राय नमः
 लक्ष्म्याय नमः सुखाय नमः अक्षय्यं नमः
 ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः मित्राय नमः
 भद्राय नमः पश्चिमाय नमः
 उत्तराय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः
 भद्राय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः
 भद्राय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः
 भद्राय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः
 भद्राय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः
 भद्राय नमः ॥ ५॥ अक्षय्यं नमः

नरकं लव मेमिति महेस उरव मे वर
 मभयं पश्य पश्य पश्येति मनुः पश्येत्
 पूष्टं पश्येति विलीनं पितुः केवले
 सुनन्दं पितृभूय मया मिश्रं भुण्क्तु ॥
 उतिष्ठिषु वदतु मनुः सुहृत् वतु लंघितुः
 पितुः केवले मनुः सुहृत् निमित्तं मीयसुः
 मनुः गुरुः मजेयं पितुः सुधर्मभूय ॥
 एवं पितृभूय मनुः ॥ सुमनुः गुरुः ॥
 क्रिया मनुः गुरुः ॥ वसेवी गुरु गुरुपुत्र
 पुत्रमीय किमप्यनु ॥ पितृभूय मनु
 गुरु मीय प्रपि ॥ सुपुत्रः क्रिया मनु
 सुमनुः सुपुत्रः सुगुरुः सुगुरुः सुगुरुः
 सुमनुः सुपुत्रः सुगुरुः सुगुरुः सुगुरुः
 सुमनुः सुपुत्रः सुगुरुः सुगुरुः सुगुरुः
 सुमनुः सुपुत्रः सुगुरुः सुगुरुः सुगुरुः
 सुमनुः सुपुत्रः सुगुरुः सुगुरुः सुगुरुः

[illegible]

ॐ नमः ॥ ५६७

भाउपिउः धंसेवककुपु सुतधुध धु
दुः गडग दुलः पुनसभाउः गनदुयं
सुधयिदु ॥ उउमे भहन गलपुयि
पमिमभु पदुक्त सुधमहन उरं
पिउदुः (पिउ) सुतमठिपाद भल
उ मेकलपुयं सुधेवठि मिउति दुयं
व पुनसुठिपाद भहन गदप्रः सुधि
भदुद सुधमहन पुलपेउ भहन भ
ठन पिउदुग पमिमभु लवं
पुध भहन गदप्र सुधिभदुद गदप्रवपति
सुधपदुक्त सुधमहन पलुभव सुधि
पमिमभु पदु पमिपु सुवेकुकुदुः
पुध यलुभुभउति उ पिउगः
सुधेकगवलीति रिपु दुठे सुलुपिउ

मंगे पूल्लवं भनभाण्डु जिंजिंरिषु मकि
 लुगुमहुन. धिअमंगेरभहु लवंउ
 मंगेवीप ठिलभुयं पिअमंगे लउउपिअम
 कय येमहुन. अउअमभाण्डु लवंअपि.
 पंधुप. लउउमंगे लउउउउअपअमभाण्डु
 लकेकंपिअं डिपुकुपुअअममकः पूवमा
 भननपउयउ मणिमपुकुमिडिडिगीयः
 अउमंभनमउन डिअगीयः मसंउप
 नयउ अडीपुअगंउपनयउअंभेउपूवनी
 गल्लठितः परिषदः पूउ परिषिष्टमज
 नभकुवः मधिअहउजः नीगिंदकपति
 पूउः नडिडुव नडिअन मउअंठिठि
 पीयउ मउनठितः परिषदः पूउ परिषु
 मणिमपुअउअयः येगउअमुअः उअपि
 परिषदः अडी परिषिष्ट लउम्वंहुः ।

470

निद्रयभुज 50 पं-
यभिन्नुम पुग गुरु इविहिरगपि
येयउ विदिउे ठङ्ग रविमभयमिडिउ॥

पञ्चदशमययैवै मूकवै छेगयद्विज
 ना मत्रगुड पुगेणस ककुमनगकंशुल
 डी॥ सुपरीकृत प्रवस गलप्रवसठगड
 प्रदिकु प्रउ प्रवससुठु नदुडिकेउनभा
 गलप्रवेगलप्रउः गलेगलकः म० बुद्ध
 लुमिच॥ सुणीः सुकमा भुवः कुमै
 लः भयमगडः लउ विप्रुप्रसुतु
 वदुभुडिभमे सुधि॥ वल्लये रुद्धनउ
 कुमलं परिवल्लयेड प्रत्वंम वल्लयेत्रि
 इ नवधकुं विदल्लयेड॥ वधकुं भुडिरां
 वेरुदितभधि नवल्लयेड॥ नवदुल्लं
 धरीकउ गैव ककुलि ठमवि दिउकम
 मिउप्रुप्रु थर कउ प्रयउउः॥ नमूकु
 ठेगयै मिउं नमिउं नवकहेभुभुडुः
 नगिं नमिउं यं विमु उंमूकु ठेगयैदि-
 सं॥

[illegible]

वृद्धिमुद्वृत्तुं भवेत्तन्मयीभाषवभः
 नमिद्विकल्पकभो कृमसुप्रनिर्गमव
 प्रउत्तराश्वभञ्ज पाचलमभुद्वृत्तः
 उद्वृत्ति नभवेत्तन्मयी नविमुद्वृत्तिरुत्तयः ।
कर्मदासु विरानभु ज्ञातिमउत्तयेवृत्तिः॥
 मयत्तु कुलिनत्तये वृत्तद्विपातिनद्वि
 नः भक्तुद्वृत्त कनिष्ठउत्तयेवृत्तमभनं
मोडा॥ उद्वृत्तच भिनीवत्तु वेमुद्वृत्तमउः
 पं नृपुकाद्वृत्तः उद्वृत्त उतः मुद्वृत्तमभम
 गडा॥ वेमुद्वृत्तं उनिवृत्ति धिउत्तयेवृत्त
 माद्विद्वृत्त नृपुकाद्वृत्तः उद्वृत्त उतः
 मुद्वृत्तमभमोडा॥
 पिउत्तिभंभुत्तये वृत्तंमपिउत्तमद्वृत्त
 उद्वृत्त उतः नृपुकाद्वृत्त कनिष्ठमपिउत्तमद्वृत्त

मयत्तु कुलिनत्तये वृत्तद्विपातिनद्वि
 नः भक्तुद्वृत्त कनिष्ठउत्तयेवृत्तमभनं
 मोडा॥ उद्वृत्तच भिनीवत्तु वेमुद्वृत्तमउः
 पं नृपुकाद्वृत्तः उद्वृत्त उतः मुद्वृत्तमभम
 गडा॥ वेमुद्वृत्तं उनिवृत्ति धिउत्तयेवृत्त
 माद्विद्वृत्त नृपुकाद्वृत्तः उद्वृत्त उतः
 मुद्वृत्तमभमोडा॥
 पिउत्तिभंभुत्तये वृत्तंमपिउत्तमद्वृत्त
 उद्वृत्त उतः नृपुकाद्वृत्त कनिष्ठमपिउत्तमद्वृत्त

नवमूर्तुं भविष्यत् सुदृष्टिगणक
एकैव विक्रान्तं विरक्तं न विपि॥

पिङ्गल पुरिः ५३ः भनधुपुक्कगुठि
गिलिङ्ग पिङ्गमनम भनधुपुक्कगुठि

ॐ ॥ इति पञ्चमस्कन्धे भगवत्पिण्डोक्तं
संभुताः प्रसंगे भगवत्पिण्डोक्तं

ਪ੍ਰਮਾਣਿਯੇ ॥ ਸ੍ਰੀਮਤਮਾਤਮਿਨੀ ਸ੍ਰੀਮਤਿ
ਪਦਸਿੰਘੇ ਦੇਵਿਤਿਨੀ ਨਿਬੰਧਿਤੁ

५८ भुङ्गाभा ॥

शुभ्रयशुभ्रनियम नानुशुभ्रउत्तरका

सुखं ५३ मज्जय चक्रय मनुष्यवदभा॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यवन्निप्रतिष्ठः॥ गुरुमधुभीमः॥

मभस्मस्वः प्राग्भूमाभैल नि रुतकधुवि
वलयता॥

ਪਾਵਾਂ ਸ੍ਰਮੁਸ਼ੰਤ੍ਰੇ, ਜਗਦ ਬਹਿਨਾਸੰ ਮਹਿਨਾ ਕਉ ਅੰਦੋਲ
ਬਡਣੈ ਸ੍ਰਮੁਸ਼ੰਤ੍ਰੇ॥ ਨਿਸ਼ਧ - ਓ ਪਿੰਨਿਸ਼ਧ ੫੩ 95 ਪਤਿ 90

मधारे यस्तु विनिभुं कुण्डुं सुविनिहमः { ५३
 पाशुता नउं शुद्धं कुरुते नउं भागउभा { ८३

नवमे सममे धरति उरभयि श्रीजदउ॥

न निमीधविउय सुकुपु प्रयं प्रकु लयिद्विः

विगमा उउग सुति मवः धिअ गालः भडा॥

विनयमुप सीपकुं विनयमुप प्रणनं

कधं उद्विधमं प्रेउं इरं गहु डिग नमः॥

मु मैव भंगीपु यवकुद मयेठवडा उव

५७१ मीधमुनं गीपु सुयुगेष्टु मैदरः ॥ ॥

प्रवधुमीधधमवचनंग याधु प्रमीधप्रद

नमनंग प्रइसुमीधधमवचन उद्वि नरका

प्रमीधप्रद मृगउः॥ मीधप्रलेपनपुंभं

कधमु सुकुने भियं सुमिर लवकलेन

पंसकेदे ठविप्रति॥ भीपिपुवनवउन कुउय

कधनउष कं कुकेडा म्वन भमडा मीपुनैव

निवपयेडा॥ धिया वभळमुनमीधमभनं

दीपं समयते पुंमै कृष्णं कृष्णं नमिष्यः
यः ज्योति मयस्कृतिं उभयं परलयः ॥

नकुदः ॥ पुंमै निनकुत्तुन दीपं सम
यते पद्मभुजः सुगणउच्च ॥ ५३ ॥
कुमे दीपं यद्यति मेवः मयुभुजः
कुमे मयुभुजं मयुभुजं कृष्णं नमिष्यः ॥
राधभालं पुष्पभालं कृष्णं नमिष्यः ॥
ये महेन्द्र यद्युमे मयुभुजं नमिष्यः ॥
यद्युमे मयुभुजं मयुभुजं नमिष्यः ॥
मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं नमिष्यः ॥ पुंमै-॥
विधिद्वि विष्टमयुभुजं लष्टुपैयकीरिया
नष्टमयुभुजः विधिद्वि विष्टमयुभुजं नमिष्यः ॥
(मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं)
मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं ॥
मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं मयुभुजं
नमिष्यः विधिद्वि विष्टमयुभुजं नमिष्यः ॥

मालकांश मनेइंश वैकल्य ३ धलीपतिः ॥ १ ॥ मक्क
मत्तंश धनुतेमुत्तज्जितः ॥ ॥ ५४१

भवण्डिल श्रुः पिउ ठह विमधिउः
उत्तपण्डिल श्रुः निगमनपिउण्डः ॥
पिउ कयल मभुपु यः जद त्रिउत्तलं
सुभां उमुव सुकु उउयं रणिउवेडा ॥
भवण्ड उभां जद बुद्धण्ड पः भग्मा
भाउउदेव रुउउं उउं म विपुलं रुवेडा ॥
उच्छिं मिव निमलं वमनं भाउकण्डभा
मुकु भुपविशलि रुदिउ कुउपः उिलः ॥
शीलि मुकु पविशलि रुदिउ कुआउिलः
शीलि गउ प्रयुगुउ मोम भउं ० भुगं ॥
पमकेषु गणसुय मत्रा मिषयुग मिष
पिउ पिणं नरुउउं मपिण्ड काल विन ॥
मुपह नये जीजस मनु भद श्रुउषा सु
मुकु विरैः कदं मुदः कदं भद्वदि ॥
उजिपाक ३ भग्माउमति ॥

कर्मिणि भवमेव हं भवमेवै गिष्ठं वभु
 उवे निया नभु हृष्ट मन मिन नुमिडा ॥
 उभय सुभु लिमय नि शुभकली विमेषः
 एव द्वेता निमप्रैति य शुभमन उयं भिम ॥
 सुकुटु ठम भदमं यः जदद जिठेरानं
 सुभु उकुवे सुकं धिउं नेप डिष्ठि ॥
 मभु लानि सकदालि नेवै सुलकैः पुठैः
 गोभम डि कय वधि पुलीउ नोष्ठमन पभ
 ल सुलं मझील महुउं उवलयेउ ॥
 नभु मेव भदमुन उहु मेनं कम मन नयमं
 नमिरे वभिं नयम ठमनं भद्रेडा ॥
 पविइंड करीकुड यमभ लभुउं डिं रक्तमं
 उकुवे सुकुं निग मैः धिउं ठिगैः ॥
 १ वेज्ञ ननं भमालहनं ॥

मनुष्य भवे विष्णुः कानन्द रती भदीभा
 गन्तमानं वराजय केम सुप्रतिपुति ॥
 उभय सुप्रभवे मचे प्र मनुष्य सुकाम भुजभा
 निमग्न सुप्रमय सुप्रभवे च डिक्क च उतं मय उ ॥
 च डिक्क नः मय सुजं भवे भवे भुं ठवे उ।
 विष्णु कहे म कहे म श्रय सुक्क डि म क भय ॥
 मय भवे न क उहे भवे म सुप्रभवे म विमि
 म जं भवे म म म सु विष्णु म विमल न ॥
 मय भवे य म विष्णु म सुप्रभवे सुमि निमः
 मय भवे म म सु सुप्रभवे म म म म ॥
 मय भवे म म सु सुप्रभवे सुमि निमः
 मय भवे म म सु सुप्रभवे सुमि निमः
 मय भवे म म सु सुप्रभवे सुमि निमः

सुप्रभवे

सुप्रभवे

सुप्रभवे

अथः पद्म पत्त कट्ट मंभुमिवका
 भउत्तनि धिउदवै मूहुं मभुतिमानवः
 यातिधि यभुभामभु भउत्तु प्रवत्त
 मतिधिः धिउपत्त उप्रानीयाप्रयत्तः
 यावत्त कट्ट उल्लयेः कृम मभुमिवकाः
 मुत्तं प्रउ प्रांत्तवत्त यावत्त म्भिकमत्तं
 वम्भिक मभुतिरूत्तु धिउत्तं म्भुत्तः मभु
 निम्भु प्रउत्तगत्तु मभुत्तं मभुत्तं
 म्भुत्तं मभुत्तं मभुत्तं मभुत्तं मभुत्तं
 मभुत्तं मभुत्तं मभुत्तं मभुत्तं मभुत्तं

महेन अहमविषयं उर श्रमजः ॥
 वमभक्त निहितेन यस्तु भवेत् सैव कर्म कष्टं ॥
 मयमहेन
 कलिलं मत्रिहितेन यस्तु भवेत् पत्रकर्म कथयता ॥
 यथाभामिर्कनेजं वमं मरीं महेत् मय महेत् कलिल ॥

शुद्धी मन्त्रेण

विकारं मेधनयन मोलं मत्रियमत्रुमं
 वक्ष मचं उरचं म नत्रकं तिलत्रुमं
 विकारं एकवक्ष यस्तु पवीतं मत्रुमं
 मोलं कर्म अत्रियममं मत्रुमं
 नकादमा ।

मयुष्टं कनकास पक्षे सन्न सिने उषा
 हृष्टपत्र कलशकी नत्रकं तिलत्रुमं

उ३: भवभत्त पत्त एकीष्ट विविष्ट ३०:
उ३: भवभत्त पत्त भत्त विक्रं कवि निमित्तपत्त॥
भुक्तकमिकयं

यशभानभुक्तभत्त नीसु विराभत्तमः
उ३: भत्त भुक्त भुक्त वामभत्त भुक्त भत्तः
भुक्त विक्रं भुक्त भत्तः भत्तः कर्त्तव्यः

यति भत्त भुक्त भत्त यत्त भत्तः भुक्त भत्त
भुक्त भत्त भुक्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
उ३: भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त

भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त

भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त

भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त
भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त भत्त

[illegible]

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਪੁਤ੍ਰ ਕੁਤ ਬ੍ਰਹਮਾ ਪੁਨਾ ॥ ੧ ॥ ਕਤੁ:
ਸ੍ਰਾਮੁ ਸੇਖਾਤੁ ॥ ॥ ੩ ॥ ਕਾਨਿ ਸ੍ਰਾਮੁ ਨਿਖਲੁ ॥

३३० भवामं पात्रं यथाह विदितं ३३० उक्तं
यस्मिन्मन्त्रे विदितं उदि निक्षिपत् ॥

[illegible]

484

489

490

| | |
|------------|---|
| मय नम | ० |
| मय मय मय | ९ |
| हुं मय नम | ३ |
| पुनः पिमनः | ८ |
| मय नमः | ५ |
| पुनः पिमनः | ७ |



